एन इंट्रोडक्शन टू ऑस्ट्रियन इकोनॉमिक्स

- थॉमस सी. टेलर

1

परिचय

आर्थिक विचारों का इतिहास, अन्य विषयों की भांति विचारों के मिले-जुले वादों को प्रदर्शित करता है जो मतों के विशिष्ट संप्रदायों में बंट गया है। विभिन्न विचारकों के विचारों को वर्गीकृत करने का यह तरीका कुछ समूहों की असमानताओं की बजाए उनकी समानताओं पर अपना ध्यान केंद्रित करता है। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्रांसीसी प्रकृतिवादी अपनी प्रसिद्धि के शिखर तक पहुंच गए थे। यह विचारक आर्थिक विचारों के प्रथम आधुनिक संप्रदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके बाद क्लासीकीय आर्थिक विचारों, मार्क्सवाद और समाजवादी विचारों का विकास हुआ। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पश्चिमी यूरोप में आर्थिक विचारों के दो विरोधी संप्रदायों- जर्मन ऐतिहासिक संप्रदाय और ऑस्ट्रियन संप्रदाय का जन्म हुआ। जर्मन ऐतिहासिक संप्रदाय के आर्थिक इतिहास की सहायता से आर्थिक सच्चाई को जानने का प्रयास किया। प्रारंभिक ऑस्ट्रियन विचारकों ने 1883 में जर्मन संप्रदाय द्वारा विकसित अनुभवाश्रित पद्धति को अपनी आलोचना का शिकार बनाया। इनका मत था कि आर्थिक ज्ञान इतिहास के अध्ययन से नहीं बल्कि सैद्धांतिक विश्लेषण से उत्पन्न होता है। पद्धति को लेकर उत्पन्न हुआ विवाद दो दशकों से अधिक समय तक बना रहा।

यह मोनोग्राफ ऑस्ट्रियन संप्रदाय के प्रमुख विचारों की व्याख्या करने का एक प्रयास है। ऑस्ट्रियन संप्रदाय की शुरुआत 1873 से 1903 तक वियना विश्वविद्यालय में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रोफेसर कार्ल मेन्गर से हुई। सन् 1871 में मेन्गर ने अर्थशास्त्र के सिद्धांत (Principles of Economics - *Grundsatz der Volkswirtschaftslehere*) नामक पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में मेन्गर ने मूल्य के सिद्धांत को प्रतिपादित किया। इस सिद्धांत ने महान प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों को काफी लंबे समय तक उलझाए रखा। यह सिद्धांत मूल्य का विषयगत सिद्धांत था

जो सीमांत उपयोगिता (आर्थिक विचारों के इतिहास का श्रेय अब मेन्गर, विलियम स्टेनले ब्रिटिश अर्थशास्त्री जेवेंस, फ्रांसीसी अर्थशास्त्री लियो वालरॉ को जाता है जिन्होंने लगभग एक ही समय पर स्वतंत्र रूप से मूल्य के विषयगत सिद्धांत को विकसित किया। देखें (Mark Blang, Economic Theory in Retrospect (Homewood: Richard D. Irwin, 1962, pp. 272-73) के सिद्धांत पर आधारित है। इस सिद्धांत ने क्लासिकीय धारणा को दूर कर दिया कि एक वस्तु का मूल्य उसमें अंतर्निहित वस्तुगत माप है। आर्थिक वस्तुओं के मूल्य को अब उपभोक्ताओं द्वारा प्राप्त विषयगत संतुष्टि के रूप में देखा जाने लगा। मूल्य के विषयगत सिद्धांत, जो संपूर्ण ऑस्ट्रियन तंत्र का आधार बनने जा रहा था, की संपूर्ण विवेचना बाद के अनुभागों में की गई है। मेन्गर के दो महान शिष्यों फ्रेडरिक वॉन वाइजर और यूजेन वॉन बाम-वॉर्क ने यह विवेचना की है जिन्होंने विषयगत सिद्धांत को पुनर्भाषित और लागत क्षेत्र और पूंजी और निवेश सिद्धांत को पूर्णतया स्पष्ट किया है।

वाइजर ने मेन्गर की आरोपण समस्या का विस्तार किया है जो यह स्पष्ट करती है कि संसाधनों की कीमतें अथवा लागतें इनके द्वारा उत्पादित उपभोक्ता वस्तुओं की प्रत्याशित कीमतों पर निर्भर करती हैं। मेन्गर के सिद्धांत में मूल्य निर्माण को चक्रीय प्रक्रिया के रूप में दर्शाया गया है और लागत की अवधारणा, जो मेन्गर के सिद्धांत में फर्क पैदा करती है, मूल्य के विषयगत सिद्धांत से जुड़ी है। वाइजर के लागत के नियम अथवा वैकल्पिक लागतों के सिद्धांत के अनुसार एक उत्पाद को उत्पादित करने की लागत अन्य उत्पादकों के लिए उत्पादन में प्रयुक्त संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धात्मक प्रस्तावों को दर्शाती है। लागत केवल वह आवश्यक भुगतान हैं जो संसाधनों को उनके श्रेष्ठ वैकल्पिक उपयोगों से दूर बनाए रखने के लिए वर्तमान उपयोग में किए जाते हैं।

बॉम-वार्क का सबसे महत्वपूर्ण योगदान उसके द्वारा विकसित पूंजी और ब्याज का सिद्धांत था। उसने आर्थिक प्रक्रिया में समय के महत्व पर जोर दिया और पूंजी को उत्पादित उत्पादन के साधन के रूप में परिभाषित किया। उसके विश्लेषण का महत्वपूर्ण विचार यह था कि उत्पादन के पेचीदा साधन व्यक्ति की उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक होते हैं। यह उत्पादकता को, बिना उपकरणों की सहायता से और पूंजीगत वस्तुओं की सहायता से उत्पादित वस्तुओं की बढ़ी मात्रा के रूप में दर्शाता है। अप्रत्यक्ष प्रक्रिया से उत्पन्न प्रतीक्षा की अवधि ने बॉम-वॉक द्वारा विकसित ब्याज की अवधारणा की व्याख्या के लिए आधार प्रदान किया है। बॉम-वॉक का तर्क था कि अन्य बातों के समान रहने पर समान विशेषताओं वाली वस्तुओं की स्थिति में व्यक्ति भावी वस्तुओं की तुलना में वर्तमान वस्तुओं को ज्यादा मूल्य प्रदान करते हैं। यह मान्यता ही विक्रय

कीमत और लागतों में अंतर का आधार बनती है। यह अंतर राशि पूंजीपतियों को उनके द्वारा आपूर्ति की जाने वाली मध्यवर्ती उत्पादों अथवा पूंजीगत वस्तुओं के बदले में प्राप्त होती है। पूंजीपतियों की यह प्राप्ति उस समयावधि के लिए ब्याज का भुगतान है जिसमें उनके निवेशों का उपयोग किया जा रहा है। मार्क्स का मत है कि यह श्रमिकों का शोषण नहीं है। अतः मूल्य के विषयगत सिद्धांत का विस्तार करके उसमें समय-अधिमान सिद्धांत को समाहित कर लिया गया है। पूंजी के ऑस्ट्रियन सिद्धांत में हालांकि कुछ संशोधन किए गए हैं परंतु बॉम-वार्क द्वारा की गई ब्याज और उत्पादन की प्रत्यक्ष या पेचीदा प्रक्रिया की व्याख्या का ऑस्ट्रियन सिद्धांत में आज भी महत्वपूर्ण स्थान है।

ऑस्ट्रियन संप्रदाय के दो महत्वपूर्ण आधुनिक अर्थशास्त्री लुडविग वॉन मिज़ीस और फ्रेडरिक वॉन हायक हैं। 1920 के दशक में मिज़ीस ने अन्य अर्थशास्त्रियों का ध्यान इस चुनौती के साथ अपनी ओर खींचा कि आधुनिक अर्थव्यवस्था में समाजवाद पूरी तरह असंभव है क्योंकि इसमें बाजार कीमतों का अभाव होता है। मिज़ीस के अनुसार बाजार में कीमतों के बिना संसाधनों का आदर्शतम आबंटन नहीं हो सकता। ऑस्ट्रियन सिद्धांत का एक समन्वित इकाई के रूप में विकास करने में मिज़ीस और हायक दोनों ने ही महत्वपूर्ण सहयोग दिया है। व्यवसाय में चक्रीय दोलन की व्याख्या ऑस्ट्रियन ढांचे का एक अन्य महत्वपूर्ण भाग है जो सरकार की अनियंत्रित साख प्रसार की नीति के कारण उत्पन्न होते हैं। हायक का केंद्र-बिंदु समाज में ज्ञान की समस्या और बाजार में भागीदारों की पारस्परिक क्रिया में समन्वय की आवश्यकता ने अर्थशास्त्र के गहन अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस पुस्तक में हायक और मिज़ीस के विचारों को मिज़ीस के दो विद्यार्थियों इज़्राएल किर्जनर और मरे रोथबर्ड के विचारों के साथ प्रमुखता से रखा गया है। इन दोनों के विचारों ने ऑस्ट्रियन विश्लेषण के विस्तारण और स्पष्टीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मूल्य के विषयगत सिद्धांत की स्वीकार्यता में हालांकि ऑस्ट्रियन संप्रदाय को अन्य संप्रदायों से अलग नहीं किया जा सकता, परंतु आर्थिक विश्लेषण के आर्थिक उपागम में कुछ प्रमुख विशेषताएं अंतर्निहित रहती हैं। इसकी एक प्रमुख विशेषता अनम्य व्यवस्थात्मक स्थिति का होना है। विधियों को लेकर उठे विवाद की चर्चा पहले ही हो चुकी है जिसे मेन्गर ने अपनी 1883 में प्रकाशित पुस्तक में आरंभ किया था। (अब इसका अंग्रेजी में Problems of Economics and Sociology-Urbana University of Illinois, 1963 अनुवाद कर दिया गया है।) ऑस्ट्रियन संप्रदाय

द्वारा विकसित आर्थिक विश्लेषण सैद्धांतिक निगमनात्मक विवेचना पर आधारित है तथा ऑस्ट्रियन आर्थिक सिद्धांत में जर्मन ऐतिहासिक संप्रदाय की तुलना में अनुभववाद का बहुत सीमित स्थान है। सामाजिक वातावरण से उत्पन्न होने वाले आर्थिक तथ्य, ऑस्ट्रियन अर्थशास्त्रियों के अनुसार न केवल जटिल हैं वरन् परिवर्तनशील हैं जिनसे भौतिकी के वैज्ञानिकों द्वारा किए जाने वाले उपयोगों की भांति प्रायोगिक विश्लेषण नहीं किया जा सकता। तदनुसार, आर्थिक विश्लेषण में गणित की एक उपकरण के रूप में रीति या विधि के आधार पर ऑस्ट्रियन सिद्धांत की आलोचना की जाती है। ऑस्ट्रियन संप्रदाय में मात्रात्मक संबंधों को नहीं, केवल वैचारिक समझ को ही आर्थिक विज्ञान का अर्थपूर्ण आधार माना जाता है। ऑस्ट्रियन संप्रदाय के जनक मेन्गर न केवल इस पर जोर दिया वरन् अपने द्वारा किए गए कार्य में इसका अनुसरण भी किया। मेन्गर के उत्तरवर्ती अनुयायियों ने भी इसका अनुसरण किया।

ऑस्ट्रियन सिद्धांत की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता इसकी विशिष्ट विधि है। ऑस्ट्रियन अर्थशास्त्रियों का यह विश्वास है कि आर्थिक तथ्य सामाजिक शक्ति अथवा सामाजिक सत्ता जैसे समाज की अभिव्यक्ति मात्र नहीं है। बल्कि यह आर्थिक क्रियाओं में लगे व्यक्तियों के व्यवहार का परिणाम है। अतः इसके मूल तत्वों-व्यक्तियों के कार्यों का विश्लेषण किए बिना संपूर्ण आर्थिक प्रक्रिया को समझा नहीं जा सकता।

ऑस्ट्रियन विश्लेषण मानवीय प्रकृति और मानवीय दशा की वास्तविकताओं का उपयोग आधार सामग्री के रूप में करता है। व्यक्ति के मानवीय मूल्य और मानवीय क्रियाएं, समझे गए ज्ञान सहित सीमित साधन ही आर्थिक विज्ञान के केंद्र में हैं। मानवीय चूक या गलती, भविष्य की अनिश्चितता और अनिवार्य रूप से समय में परिवर्तन जैसे कारकों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह विश्लेषणात्मक उपागम एक विकसित बाजार अर्थव्यवस्था की जटिलताओं को कम करता है और बाजार के आवश्यक तत्वों की जांच करके आर्थिक प्रक्रिया की आधारभूत समझ प्रदान करता है। यह उपागम अर्थव्यवस्था, बाजार कीमतों, व्यावसायिक लाभ और हानि, ब्याज दर, स्फीति और आर्थिक अवसाद और मंदी छाए किसी भी रहस्यवादी वातावरण को दूर करता है। यह तथ्य ऐसे नहीं हैं कि जिनकी व्याख्या न की जा सके और न ही ऐसे हैं जो बिना कारण उत्पन्न हों। इनकी चर्चा अगले अनुभागों में की जाएगी।

यह पुस्तक जैसाकि इसके शीर्षक से स्पष्ट होता है, मूल ऑस्ट्रियन सिद्धांत का अवलोकन प्रस्तुत करती है। इसका केंद्रबिंदु निर्बाध बाजार अथवा पूंजीवादी अर्थव्यवस्था है। इसमें दिए गए विषयों की गहरी समझ के लिए ऑस्ट्रियन अर्थशास्त्रियों द्वारा किए गए प्रारंभिक कार्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती। बाजार प्रक्रिया में होने वाले सरकारी हस्तक्षेप, जो आजकल बड़े पैमाने पर हो रहा है, के गंभीर निहितार्थों को जानने के लिए इन अर्थशास्त्रियों द्वारा किए गए मूल कार्य को जानना ही चाहिए। और गहरी समझ के लिए प्रत्येक बड़े अनुभाग के अंत में संदर्भ सामग्री की सूची दी गई है।

यह आशा की जाती है कि यह पुस्तक ऑस्ट्रियन सिद्धांत को प्रभावी ढंग से परिचय कराएगी। केंजियन अर्थशास्त्र की अस्त-व्यस्तता, अर्थमिति (econometrics) की विस्मयकारी कृत्रिमता पेशेवर अर्थशास्त्रियों द्वारा लगाए गए पूर्वानुमानों में सफलता का निम्न स्तर, बाजार के अवास्तविक मॉडल जैसे पूर्ण प्रतियोगिता और शुद्ध प्रतियोगिता, स्फीति और बेरोजगारी का बने रहना, और आर्थिक हितों के व्यापक स्तर पर राजनीतिकरण ने सभी आर्थिक सिद्धांतों में अविश्वास को जन्म दिया है। फिर भी, यदि हमें बाजार प्रक्रिया और हस्तक्षेप के प्रभावों को अधिक गहराई से समझना है, तो ऑस्ट्रियन विश्लेषण को अनदेखा नहीं किया जा सकता। आर्थिक सिद्धांत के पाठ्यक्रम अथवा पूर्व स्नातक या स्नातक स्तर पर आर्थिक विचारों के इतिहास के पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों के लिए यह एक उपयोगी अनुपूरक पुस्तक साबित होगी।

2

सामाजिक सहयोग और संसाधनों का आबंटन

एक आदिकालीन अर्थव्यवस्था में वस्तु के रूप में गणना

किफायत जैसा विशेषण जितना राबिंसन क्रूसो जैसे एकाकी, आत्मनिर्भर व्यक्ति पर लागू होता है उतना ही हर उस व्यक्ति पर लागू होता है जो व्यापक श्रम-विभाजन और जटिल विनिमय की विशेषता वाले समाज में रहता है। रॉबिंसन क्रूसो का कार्य उपलब्ध साधनों का इस प्रकार उपयोग करना था ताकि वह अधिकतम संतुष्टि प्राप्त कर सके। क्रूसो के कल्याण को अधिकतम करने के लिए निर्णय और चुनाव की प्रक्रिया का होना आवश्यक है। इसी प्रकार आधुनिक अर्थव्यवस्था में पारस्परिक क्रिया में लिप्त बहुत अधिक व्यक्ति सभी उपलब्ध साधनों का कुशलतम उपयोग करके संतुष्टि प्राप्त करना चाहते हैं। यह आर्थिक समस्या उस समाजवादी अर्थव्यवस्था में भी विद्यमान रहती है जहां निर्णय और चुनाव जैसे विषय केंद्रीकृत आयोजन बोर्ड में निहित हैं तथा उस बाजार अर्थव्यवस्था में भी जहां व्यक्तियों द्वारा स्वतंत्र निर्णय लिए जाते हैं।

रॉबिंसन क्रूसो सीमित मात्रा में उपलब्ध संसाधनों का ही प्रभावी ढंग से प्रबंधन कर सकते थे औऱ इन संसाधनों के उपयोगों का निर्देशन करने के लिए तुलनात्मक रूप से उसे कुछ योजनाओं का निर्माण करना पड़ा। वस्तुओं और सेवाओं के चयन का क्षेत्र तुलनात्मक रूप से सीमित और सरल होने के कारण वह मात्रात्मक गणना के बिना भी प्रभावी निर्णय ले सकते थे। उनके द्वारा किए जाने वाले मूल्यांकन और पूर्वानुमान की योग्यता संभवतः उनके समक्ष उपलब्ध उत्पादक विकल्पों की अंतर्दशीय समझ और अवलोकन पर निर्भर करेगी। भौतिक उत्पाद के रूप में की जाने वाली गणना भी पर्याप्त होगी क्योंकि उसके संसाधनों में बहुत अधिक विविधता नहीं होगी और बहुविज्ञता (Versatility) का अंश भी कम होगा।

रॉबिंसन क्रूसो की उत्पादन के सभी मौलिक साधनों-भूमि, प्राकृतिक संसाधन और श्रम में से कुछ साधनों तक तो पहुंच हो जाएगी। एकाकी स्थिति में वस्तुओं को उत्पादित करने की उनकी सीमित योग्यता इन मौलिक साधनों को मध्यवर्ती वस्तुओं जैसे मशीन और उपकरण की व्यापक रेंज में परिवर्तित नहीं कर सकती। वे अति अल्प विकसित औजारों का उपयोग करने के लिए मजबूर होंगे क्योंकि विद्यमान परिस्थतियों में आधुनिक अर्थव्यवस्था वाली परिष्कृत और जटिल मशीनों की न तो उन्हें आवश्यकता होगी और न ही वह इन्हें प्राप्त कर पाएंगे। परिणामस्वरूप, उपभोक्ता वस्तुओं को उत्पादित करने के लिए उपलब्ध संसाधनों के उपयोग का निर्णय इतना अधिक जटिल नहीं होगा कि उसे किसी प्रकार के लाभ और हानि की गणना करने की आवश्यकता हो। उपयोग में लाए जाने वाले संसाधनों के प्रयोग लगभग निश्चित होते हैं। साधनों में सबसे बहुविज्ञ साधन श्रमिक का अपना श्रम होता है जिसका उपयोग प्राकृतिक संसाधनों के साथ उन वस्तुओं को उत्पादित करने में किया जाता है जिन्हें वह पसंद करता है और जिनका उत्पादन करना संभव होता है।

व्यक्ति का अपना समय और शक्ति मुख्य उपकरण बनाने, भोजन के लिए शिकार करने, शरण लेने के लिए निर्माण और कपड़ों का निर्माण तथा आराम करने में व्यतीत होता है। विद्यमान विशिष्ट परिस्थितियों और आवश्यकताओं की स्थिति में उसे अपने समय और उर्जा तथा अन्य उत्पादन के साधनों के इन उपयोगों की सफलता के पूर्व और प्रत्याशित परिणामों का संकलन और परिकलन करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। और समय की सीमितता के कारण क्रूसो टापू के प्राकृतिक संसाधनों का उनकी पूर्ण क्षमता तक दोहन नहीं कर पाता। उसके द्वारा लिए जाने वाले निर्णय उसके द्वारा किए जाने वाले कार्य की विषयगत लाभप्रदता पर निर्भर करेंगे तथा विकल्पों की इतनी सीमितता होगी कि वह अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यों के परिणामों का अवलोकन या पूर्वानुमान लगा सकेगा। क्योंकि वह अपनी संतुष्टि हेतु ही वस्तुओं का उत्पादन करता है, इसलिए उसे यह जानने में कोई समस्या नहीं होगी कि उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं में से किन वस्तुओं का चयन उत्पादन के लिए किया जाएगा। उसके अपने मूल्यों का पैमाना ही इसके द्वारा किए जाने वाले चयन का मुख्य निर्धारक होगा।

यदि एक आत्मनिर्भर गृहस्थ ने उपयोग की परंपरा धीरे-धीरे संसाधन विकसित कर ली है तो वह बिना किसी भी गणना के अपने आर्थिक संसाधनों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन कर सकेगा। इन आदिकालीन परिस्थितियों में परिणामों की गणना करने की जो भी आवश्यकता होगी, वह

विभिन्न उत्पादों जिसकी कभी-कभी वस्तु रूप में गणना की जाती है, के रूप में करेगा। विनिमय संबंधों के अभाव के कारण विनिमय का कोई माध्यम भी नहीं होगा और इसलिए गणना के उद्देश्य से किसी मापक की आवश्यकता भी नहीं होगी।

एक विकसित अर्थव्यवस्था में वस्तु रूप में गणना

कई सदियों तक आर्थिक आत्मनिर्भरता की स्थिति में बने रहने के पश्चात दुर्लभता की समस्या एक विकल्प के रूप में विकसित हुई है। यह विकल्प सामाजिक सहयोग है, जो एक समाज का आधार होता है। असल में सभी व्यक्तियों ने आत्मनिर्भरता के स्थान पर समाज को चुना है। विशिष्टीकरण और श्रम-विभाजन के परिणामस्वरूप उत्पादन में बहुत वृद्धि हुई है जिसके कारण आत्मनिर्भरता की प्रक्रिया धीमी हो गई है। सामाजिक सहयोग की प्रक्रिया के कारण तुलनात्मक रूप से प्रचुर मात्रा में वस्तुओं और सेवाओं की उपलब्धता के बावजूद भी आर्थिक समस्या विद्यमान है। आवश्यकताओं को पूरा करने वाले संसाधनों अथवा साधनों की उपलब्धता, आवश्यकताओं की तुलना में कम है। दुर्लभता की समस्या अभी भी बनी हुई है जिसका अर्थ है कि एक आधुनिक, अति विकसित और उत्पादक समाज में यह निर्णय लेना पड़ता है कि विभिन्न सीमित संसाधनों को समाज के सदस्यों की आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए किस प्रकार निर्देशित किया जाए।

आधुनिक समाज में लिए जाने वाले निर्णय आदिकालीन स्थिति वाले आत्मनिर्भर समाज में लिए जाने वाले निर्णयों की तरह सरल नहीं होते। संसाधनों की उनके संभावित उपयोगों के लिए जांच नहीं की जा सकती। विशिष्टीकरण और श्रम-विभाजन के कारण उत्पादकता में हुई भारी वृद्धि ने संसाधनों के उपयोग में लोचशीलता को काफी बढ़ा दिया है। सामाजिक सहयोग रूपी फल के कारण मूल संसाधनों श्रम और भूमि के एक बड़े भाग का उत्पादक वस्तुओं अथवा मध्यवर्ती वस्तुओं के उत्पादन में सीधे ही उपयोग हुआ है जो श्रम और भूमि की अतिरिक्त मात्रा के साथ लगाने पर उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन करती है। यहां पर हम आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक सहयोग के बीच महत्वपूर्ण भेद कर सकते हैं। एक आधुनिक अर्थव्यवस्था में जहां संसाधन रोजगार में जटिलता पाई जाती है, वहां पर रोबिन्सन क्रूसो द्वारा लिए जाने वाले निर्णयों से कहीं अधिक जटिल निर्णय लेने पड़ते हैं।

आर्थिक निर्णयों में बढ़ती जटिलता आंशिक रूप से उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं में अत्यधिक भिन्नता के कारण होती है। एक उच्च स्तर की अर्थव्यवस्था इनका उत्पादन करने में सक्षम होती है। इस अर्थव्यवस्था को यह चुनाव करना पड़ता है कि किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए और कितनी मात्रा में किया जाए। विकल्पों की संख्या जितनी अधिक होगी, इन निर्णयों को लेना उतना ही कठिन होगा। लेकिन लक्ष्यों से संबंधित निर्णय ही महत्वपूर्ण नहीं होते। जैसे रोबिन्सन क्रूसो ने किया, वैसे ही संसाधनों से जुड़े लक्ष्यों के चयन के संबंध में समाज के लोग करेंगे। संसाधनों का उपयोग किस प्रकार किया जाना है? इस प्रश्न में सबसे कठिनाई की बात यह है कि एक विकसित अर्थव्यवस्था में आर्थिक संसाधन बहुविज्ञ और विविधतापूर्ण होते हैं। श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण लाभप्रद प्रभावों वाली उच्च तकनीक व उत्पादकीय कौशलता के कारण आर्थिक संसाधन बहुविज्ञ हो गए हैं जिसके कारण उनके प्रयोग में विविधता आई है। उत्पादन के मौलिक साधनों का रूपांतरण करके बहुत बड़ी संख्या में अनुकूलन (adaptation) हुए हैं जिसके कारण विशिष्ट प्रकार के अनगिनत संसाधनों का सृजन हुआ है।

यह स्पष्ट है कि तैयार वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए असंख्य व्यवस्थित कदम उठाए जा सकते हैं, लेकिन सबसे किफायती और फायदेमंद कदम का चयन वस्तुओं के रूप में गणना करके सरलतापूर्वक नहीं किया जा सकता। संसाधनों की प्रचुरता के कारण बिना किसी आधार पर परिणामों की तुलना किए बिना उत्पादन के मौलिक साधनों को तर्कसंगत तरीके से अधिक परिष्कृत उत्पादन के साधनों के सृजन के लिए निर्देशित करना असंभव होगा। उदाहरण के लिए लोहे का उपयोग ईंजन, खेती के लिए ट्रैक्टर उपकरण, कपड़े की कताई और बुनाई की मशीनें, भवन, सांचों, तेल वेधन उपकरण, और अन्य हजारों वस्तुओं के विनिर्माण में किया जा सकता है। यह समस्या तब और भी जटिल हो जाती है जब हम पाते हैं कि कई उपयोगों में अन्य प्रतिस्थापक संसाधनों का इस्तेमाल करना कहीं उचित होगा। अतः लोहा व इस्पात के स्थान पर कई वस्तुओं में तांबा, टिन और एल्युमीनियम का उपयोग किया जा सकता है। यदि हम विकल्पों का और विस्तार करें तब यह चयन और उपयोग की समस्या बहुत गंभीर हो जाती है। यदि गणनाएं केवल वस्तु की इकाइयों के रूप में ही की जाती हैं तब संसाधन उपयोग से संबंधित निर्णय लेने में बहुत दुविधा होगी। ऐसी स्थिति में दुर्लभ संसाधनों का बहुत अस्त-व्यस्त आबंटन होगा।

एक बार जब आत्मनिर्भरता की जंजीरें हटा देते हैं और विनिमय के लिए उत्पादन की शर्त को मान लेते हैं अर्थात् पूर्णरुपेण बाजार वाले समाज में विनिमय के माध्यम मुद्रा के द्वारा ही बड़े पैमाने पर किए जाने वाले विनिमय संभव हो पाते हैं। मौद्रिक गणना हमें एक ऐसा अपरिहार्य साधन प्रदान करती है जिसके द्वारा आधुनिक अर्थव्यवस्था में उपलब्ध विभिन्न संसाधनों और उत्पाद को एक आम साम्यता में रूपांतरित कर सकते हैं। यह वह आम साम्यता (denominator) है जो आगत-निर्गत कलन और पूंजी-आय कलन-जो दुर्लभ संसाधनों के आबंटन के लिए महत्वपूर्ण है, के लिए आधार प्रदान करता है। यह कलन बहुत आवश्यक है क्योंकि संसाधनों के दुर्लभ होने के कारण उत्पादन प्रक्रिया में अंर्तप्रवाह और बाह्य-प्रवाह, लागत और लाभ की सावधानीपूर्वक तुलना जरूरी है।

सामान्यतया यह माना जाता है कि एक आधुनिक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं के रूप में की जाने वाली गणना संसाधन आबंटन का उचित आधार नहीं हो सकती। यदि हम संक्षेप में नजर डालें कि समाजवाद के अगुआ समर्थकों ने किस प्रकार वस्तु रूप में की जाने वाली गणना की अपर्याप्तता को जान लिया, तो हम पाते हैं कि बाजार अर्थव्यवस्था के घोर विरोधी भी अब संसाधनों के तर्कसंगत आबंटन के लिए एक आम साम्यता (denominator) की आवश्यकता को पहचानने लगे थे।

1920 में लुडविग वॉन मिज़ीस ने समाजवाद के सिद्धांत को तब चुनौती दी जब उन्होंने कहा कि वस्तु रूप में गणना की अपर्याप्तता के कारण आधुनिक अर्थव्यवस्था में समाजवाद को कार्यशील नहीं किया जा सकता। (Ludwing Von Mises, "Economic calculation in the Socialist Commonwealth," paper republished in English in Collectivist Economic Planning, ed. F.A. Hayek (London: G. Routledge & Sons Ltd., 1935, pp. 87-130) उसने समाजवादी सिद्धांतवादियों पर आरोप लगाया कि उन्होंने आधुनिक अर्थव्यवस्था में संसाधन आबंटन जैसे महत्वपूर्ण कार्य की उपेक्षा की है। इन समाजवादियों ने इस समस्या के बारे में अपने विश्वास में यह मान लिया कि समाजवाद अपरिहार्य है और अतः प्राकृतिक रूप से संभव भी है। किसी एक भी मूर्धन्य वक्ता ने समाजवाद के बारे में यह बताने की कोई कोशिश नहीं की दुर्लभ संसाधनों के रोजगार से संबंधित तर्कसंगत निर्णय किस प्रकार लिए जाएंगे। उन्हें अब इस मुद्दे का सामना करना पड़ेगा कि वैज्ञानिक विचार-विमर्श और खोज के क्षेत्र में इतिहास के अटल नियमों में विश्वास का कोई स्थान नहीं है।

प्रमुख समाजवादी सिद्धांतवादियों ने बाद में इस बात पर अपनी सहमति व्यक्त की कि उनके सिद्धांत में इस बिंदु पर विस्तार की आवश्यकता है। तब उन्होंने यह समझाना शुरू किया कि वह कैसे यह विश्वास करते थे कि बाजार शक्तियों द्वारा स्थापित प्रतियोगिता के अभाव में केंद्रीय आयोजक किस प्रकार आबंटन प्रक्रिया को निर्देशित करते हैं। इस व्याख्या से इस मान्यता की पुष्टि होती है कि वैकल्पिक आर्थिक क्रियाओं के प्रभावों की योजना अधिकारियों द्वारा सामान्य रूप में गणना करने के लिए कुछ विधियों की आवश्यकता होगी। (Fred M. Taylor, "The guidance of Production in a Socialist State," American Economic Review, no. 1 (March 1929): 1-8; also Oskar Lange, "On the Economic Theory of Socialism," Reviews of Economic Studies, IV no. s 1 and 2 (October 1936): 53-71 and (February 1937): 123-42) वे इस बात पर सहमत थे कि वह अपने लेखों में इस विषय पर कुछ कहने में असफल रहे। उन्हें यह विश्वास था कि एक आधुनिक अर्थव्यवस्था के प्रबंधन में वस्तु रूप में गणना करना अपर्याप्त था। उनके जवाब पर विवाद का चरमबिंदु यह था कि केंद्रीय योजना प्राधिकारी परीक्षण प्रणाली के माध्यम से कीमतें तय कर सकते थे जिसमें प्रत्येक वस्तु विशेष की अधिकता और अभाव कीमतों के निर्धारण का आधार बनती है।

अर्थव्यवस्था में विनिमय के माध्यम में वस्तुओं की कीमतें संसाधनों के आबंटन में संकेतक का कार्य करती हैं। वस्तुओं की कमी इन वस्तुओं की कीमतों में उर्ध्वगामी समायोजन की मांग करती है तथा अधिकता इन वस्तुओं की कीमतों में कमी करने के लिए प्रेरित करती है। कीमतों में किया जाने वाला यह समायोजन वस्तुओं के उत्पादन में समायोजन के लिए प्रेरित करेगा। कीमत में वृद्धि पूर्ति में वृद्धि के लिए प्रेरित है जबकि कीमत में कमी पूर्ति में कमी करेगी। आखिरकार इस प्रकार संतुलित कीमतें तय हो जाएंगी और इस प्रक्रिया में मध्यवर्ती और तैयार वस्तुओं दोनों में से अधिकता और कमी दूर हो जाएंगे। केंद्रीय कीमत निर्धारण प्राधिकारी और योजना प्राधिकारियों द्वारा जारी मौद्रिक दिशा-निर्देशों की सहायता से संसाधनों को तर्कपूर्ण रूप से काम में लगाया जाएगा। समाजवादियों की स्थिति अब यह है कि समाजवादी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं में गणना करने से खराब नहीं होगा और मिज़ीस को धन्यवाद कि समाजवादी इस बिंदु को प्रोत्साहित करने में सफल रहे हैं। (ऑस्ट्रियन सिद्धांत अपने इस दावे में अटल रहे हैं कि शुद्ध समाजवादी समाज में आर्थिक गणना करना असंभव है। वास्तविक बाजार कीमतों के अभाव में केंद्रीय प्राधिकरण द्वारा जारी फरमान बाजार शक्तियों को प्रेरित करने के लिए अयोग्य हो जाता है और इसलिए यह किसी काम का नहीं है। (लुडविस वॉन मिज़ीस देखें- Human Action: A Treatise

on Economics; *Chicago: Henry Regnery Company, 1966* pp. 698-715) इस तथ्य को कि समाजवादी समाज आज बाजार समाजों से प्राप्त कीमत सूचना का उपयोग करने योग्य हैं, नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। संसाधन आबंटन से संबंधित सामाजिक निर्णय एकाकी और शुद्ध समाजवादी वातावरण से उत्पन्न नहीं होते।)

समन्वय और जानकारी की समस्या

आत्मनिर्भरता के लिए उत्पादन और सामाजिक सहयोग के आधार पर किए जाने वाले उत्पादन के बीच अंतर यह है कि बाद वाली व्यवस्था में ही लोग श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण के लाभों को महसूस कर पाते हैं। इसके अतिरिक्त, एक और अंतर यह है कि आत्मनिर्भर उत्पादक वस्तुओं का उत्पादन जहां अपनी संतुष्टि के लिए करता है, वहां सामाजिक सहयोग वाली व्यवस्था में उत्पादक अन्य व्यक्तियों की संतुष्टि के लिए उत्पादन करते हैं। असल में एक आधुनिक अर्थव्यवस्था प्रत्येक व्यक्ति अपनी कुशलता और शक्ति को एक उच्च स्तर की विशिष्टीकृत क्रिया में लगाता है जो उन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करता है जिनका कोई और व्यक्ति उपयोग करता है। यदि हम सभी में से प्रत्येक व्यक्ति को केवल अपने लिए उत्पादन करने के लिए बाध्य किया जाए, तब हम सभी अपने को एक दुखद स्थिति में पाएंगे।

विशिष्टीकरण और श्रम विभाजन जैसे तत्वों पर निर्भरता संसाधनों के कुशलतम आबंटन की समस्या को और जटिल बना देती है क्योंकि यह बहुत से व्यक्तियों के प्रयासों और व्यक्तिगत योजनाओं में समन्वय की आवश्यकता पर निर्भर करता है। हायक ने श्रम विभाजन की समस्या को जानकारी विभाजन की समस्या कहा है जो कि सामाजिक विज्ञान में अर्थशास्त्र की वास्तव में केंद्रीय समस्या है। हायक ने केंद्रीय प्रश्न को निम्न रूप में रखा है। विभिन्न मस्तिष्कों को यदि जान-बूझकर आगे लाया जाए तो इन मस्तिष्कों में व्याप्त टुकड़ों में बंटी जानकारी किस प्रकार परिणाम देगी? मस्तिष्क को निर्देशित करने के लिए जानकारी की आवश्यकता होती है जो एक व्यक्ति नहीं रख सकता। इस अर्थ में यह प्रदर्शित करने के लिए दी हुई परिस्थितियों के अंतर्गत व्यक्तियों की स्वतः प्रवर्तित क्रियाएं संसाधनों का वितरण करती हैं। इन क्रियाओं को देखकर ऐसा लगता है कि यह किसी एक योजना के अंतर्गत हो रही हैं, परंतु किसी ने भी कोई ऐसी योजना नहीं बनाई होती। इस समस्या के उत्तर की व्याख्या सामाजिक मस्तिष्क के रूप में की जा

सकती है। (एफ.ए. हायक इकोनॉमिक्स ऐंड नॉलेज इंडिविलिज्म ऐंड इकानॉमिक आर्डर, शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 1948, पेज संख्या 54)।

ज्ञान की इस समस्या की गंभीरता को कम करके आंका ही नहीं जा सकता। स्पष्टतया श्रम-विभाजन की व्यवस्था अव्यवस्था और भ्रम की संभाव्यता को कम करती है। यदि यह व्यवस्था कार्य करती है तब अर्थव्यवस्था में एक ही समय पर व्यक्तियों द्वारा निर्णय लेने और कार्य करने के लिए कुछ साधन अवश्य ही होने चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि ज्यादातर लोग चाहते हैं कि लकड़ी का अधिक उपयोग कागज उत्पाद के उत्पादन के स्थान पर घरों के निर्माण में होना चाहिए, तब संसाधन उपयोग में परिवर्तन को किसी संकेतक या सिग्नल के माध्यम से प्रभावी ढंग से संप्रेषित करना होगा। अन्यथा दुर्लभ संसाधनों का सबसे वांछनीय रूप में उपयोग नहीं हो पाएगा और इनका उपयोग कम आवश्यक मानवीय जरूरत की संतुष्टि में किया जाएगा।

फिर भी पूर्ण प्रतियोगिता का पारंपरिक मॉडल अपनी मान्यताओं जैसे पूर्ण जानकारी के साथ एक ही समय पर लिए जाने वाले निर्णय के कार्य व्यवहार की पूर्ण उपेक्षा करता है। मॉडल में मान लिया जाता है कि तकनीकी से संबंधित ज्ञान, रुचि आदि दिए हुए हैं और सभी व्यक्तियों की योजनाएं एक दूसरे के साथ लगातार फंसी हुई हैं। भौतिक विज्ञान में प्रयुक्त तथ्यों की तरह जानकारी को आंकड़ों के रूप में दर्शाया जाता है। परंतु सामाजिक विज्ञान की जानकारी की प्रकृति में जानकारी के इस दृष्टिकोण का गलत अर्थ लगाया जाता है। मानवीय निर्णयों और क्रियाओं से संबंधित हमारी जानकारी बहुत ही कम है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में निहित ज्ञान में अन्य व्यक्तियों के भावी निर्णय और क्रियाओं का अनुमान भी शामिल रहता है। यह अनुमान विषयगत विचार हैं यह ऐसे तथ्यों पर आधारित नहीं होते जैसे भौतिक विज्ञान में प्रयुक्त होते हैं।

व्यक्ति जैसे-जैसे बाह्य और वस्तुगत तथ्यों और अन्य व्यक्तियों के निर्णय और क्रियाओं के कारण अतिरिक्त अनुभव का लाभ उठाता है, उसके द्वारा लिए गए निर्णयों और क्रियाओं में संशोधन की संभावना रहती है। पूर्ण जानकारी के बिना भी निर्णय लिए जाते हैं, जिसका अभिप्राय है कि उपलब्ध आंकड़े दुराग्रही और सारहीन होते हैं जो सोच और खोज से उपलब्ध होते हैं और यह उपयोग के योग्य नहीं होते। अतः बाजार प्रक्रिया एक प्रकार से अनवरत रूप से जारी परीक्षण

प्रणाली है जहां बाजार में भागीदारों की नई सोच उनकी योजनाओं और क्रियाओं में परिवर्तन लाती है।

बाजार प्रक्रिया में प्रेरक बल उत्पादक यानी उद्योगपति हैं जो बाजार प्रक्रियाओं में संभावित सुधार से उत्पन्न होने वाले लाभ के अवसरों को देखते हैं। बाजार में प्रक्रिया निर्बाध रूप से जारी रहती है क्योंकि लाभ प्राप्ति के लिए अनवरत खोज जारी है और उसके परिणामस्वरूप प्रतियोगी उत्पादक-उद्यमकर्ताओं द्वारा बाजार में बदलाव किए जाते हैं। जहां बाजार में अन्य भागीदार लगभग सुस्त बने रहते हैं, शायद उन्हें लाभ से जुड़े अवसरों के बारे में जानकारी न हो या उनकी कोई रुचि न हो, वहां दूसरी ओर उद्यमकर्ता –उत्पादक लाभ की खोज जारी रखते हैं लाभ संभाव्यताओं का पूरा फायदा उठाते हैं। जिन आंकड़ों की वह पहचान करते हैं और उनके आधार पर जो कार्य करते हैं, वह हो सकता है कि भ्रमपूर्ण हों और तदंतर गलतियों का एहसास हो जो मौद्रिक हानियों में नजर आ सकती है जो आगे बाजार में बदलावों के लिए प्रेरित कर सकती है। एक बार जब अपूर्ण जानकारी विद्यमान है, कीमत सिद्धांत और बाजार की तस्वीर, परंपरागत विवाद से काफी अलग हो जाती है। उद्यमकर्ताओं द्वारा अर्जित लाभ और हानियों के बारे में अगले अनुमान में अधिक गहराई से खोज करेंगे। (बाजार प्रक्रिया और इसके उप सिद्धांत प्रतियोगी उद्यमी क्रियाओं के प्रभावी विश्लेषण के लिए देखें, इज़्राएल एम. क्रिजनर, कंपीटिशन ऐंड ऑन्ट्रप्रेनरशिप, शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो, प्रैस, 1973)

संदर्भ ग्रंथावलीः

- हायक, फ्रेडरिक, ए. सं. कॉल्टिविस्ट, इकोनॉमिक प्लानिंग क्लिफटोनः एन.जे. कैली, 1975, द काउंटर-रिवोल्यूशन ऑफ साइंसः स्टडीज ऑन दि एब्यूज ऑफ रीजन। न्यूयॉर्क फ्री प्रैस, 1952.
- इंडिविज्युवलिज्म ऐंड इकोनॉमिक ऑर्डर, शिकागोः द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 1948. खास तौर पर इकॉनॉमिक्स ऐंड नालेज दि फैक्ट्स ऑफ दि सोशल साइंसेज़, और दि न्यूज ऑफ नॉलेज इन सोसाइटी देखें। क्रिजनर, इज़्राएल एम. मार्केट थ्योरी ऐंड दि प्राइज़ सिस्टम। न्यूयार्कः वैन नोस्ट्रेंट, 1963 पृ. 33-44.
- मिज़ीस, लुडविग वॉन ह्यूमन ऐक्शनः ए ट्रीटाइज ऑन इकोनॉमिक्स, तीसरा संस्करण, संपादित, शिकागोः हेनरी रेग्नरी कंपनी, 1966, पृ. 143-76 और 698-710

3

आर्थिक गणना

कीमत प्रणाली की भूमिका

यह दर्शाया जा चुका है कि सामाजिक सहयोग का निचोड़ विशिष्टीकरण और श्रम और जानकारी दोनों का विभाजन है। अध्ययन के उद्देश्य इस तथ्य के दो महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। प्रथम निहितार्थ यह है कि सामाजिक सहयोग के फलस्वरूप एक बड़ी रेंज में मध्यवर्ती और अंतिम उत्पाद का उत्पादन होता है। वस्तु रूप में की गई गणना से दुर्लभ संसाधनों का आबंटन प्रभावी रूप से नहीं हो सकता। एक सामान्य समानता सूचक (denominator) का होना बहुत आवश्यक है। द्वितीय निहितार्थ यह है कि सभी के द्वारा एक साथ विकेंद्रित होकर निर्णय लेना और सामाजिक सहयोग के लिए समन्वित वैयक्तित योजनाओं की आवश्यकता पड़ती है जो अपूर्ण जानकारी और सूचना पर आधारित है। बाजार अर्थव्यवस्था में कीमत प्रणाली के द्वारा यह दोनों आवश्यकताएं एक साथ पूरी हो जाती हैं। कीमत प्रणाली की कार्य प्रणाली की विस्तृत व्याख्या बाद में की जाएगी। इस बिंदु पर सामान्य अर्थ में कीमत प्रणाली की इसके दोनों कार्यों-आर्थिक गणना के साधन के रूप में और समन्वयकारी संचार के साधन के रूप में व्याख्या करना पर्याप्त होगा। वास्तव में, जैसाकि दर्शाया जाएगा यह दोनों कार्य एक ही चीज से जुड़े हैं अर्थात् सामाजिक सहयोग और बाजार कीमत की प्रणाली की व्यवस्था को संसाधन आबंटन की उसी समस्या से जोड़ते हैं।

आर्थिक गणना बनाम तकनीकी गणना

आर्थिक गणना कोई तकनीकी समस्या नहीं है। तकनीकी, बाह्य चरों के एक सैट, जिनको विभिन्न संयोगों में एक विशिष्ट परिणाम प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जा सकता है, के बीच मात्रात्मक रूप से कारणात्मक संबंधों को स्थापित करती है। तकनीकी गणना की प्रकृति यह है कि 6a+4b+3c+....xn 8p परिणाम देगा। लेकिन तकनीकी यह नहीं कह सकती कि a, b,c संसाधनों की विशिष्ट मात्राओं से प्राप्त होने वाला परिणाम साधनों के संभावित वैकल्पिक उपयोगों की तुलना में सबसे उपयुक्त होगा। इसी अर्थ में तकनीकी के द्वारा यह नहीं कहा जा सकता कि उत्पादन करने की एक विधि, विभिन्न संसाधनों के संयोगों से बनी उतने ही उत्पादन अन्य विधि की तुलना में श्रेष्ठ है। मिज़ीस ने समस्या की व्याख्या इस प्रकार की हैः

इंजीनियरिंग की कला यह निश्चित कर सकती है कि एक निश्चित बिंदु पर नदी की चौड़ाई को देखते हुए पुल को किस प्रकार बनाया जाए और इसकी भार वाहन करने की क्षमता क्या होगी। परंतु इससे इस प्रश्न का जवाब नहीं मिलता कि उत्पादन के भौतिक साधनों और श्रमिकों को रोजगार के उस क्षेत्र से निकाला जाए जो आवश्यकताओं को शीघ्र ही संतुष्ट करते हैं। यह हमें नहीं बता सकता कि क्या पुल को बनाया भी जाए या नहीं, पुल को कहां बनाया जाए, भार वहन करने की इसकी क्या क्षमता होना चाहिए और निर्माण की विभिन्न संभावनाओं में से किसका चुनाव करना चाहिए (लुडविग वॉन मिज़ीस, ह्यूमन एक्शन, शिकागोः हेनरी रेग्नरी कंपनी, 1966 पृ. सं. 208)

मैक्स वैबर ने उसी बात को निम्न कथन के रूप में कहा हैः तुलनात्मक अर्थ में एकल तकनीकी साधन के लिए प्रश्न "क्या" की लागत अन्य साधनों के साधन रूप में विभिन्न संभावित तकनीकी साधनों की संभावित उपयोगिता पर निर्भर करती है। (मैक्स वैबर, द थ्योरी ऑफ सोशल ऐंड इकोनॉमिक आर्गेनाइजेशन, न्यूयार्कः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1947, पृ. सं. 162)

तकनीकी गणनाएं केवल वस्तु रूप में ही की जा सकती हैं। यह मानवीय निर्णयों और क्रियाओं के लिए पर्याप्त नहीं होतीं क्योंकि इनमें किसी अधिमान्य गुण का अभाव रहता है। एकांत (ivory-tower) सिद्धांतवादी यह दावा करने में सही हो सकते हैं कि प्लेटिनम से एक उत्कृष्ट सुरंग बनाई जा सकती है। लेकिन मौद्रिक गणना इसे एक आर्थिक मुद्दा बना देती है और एक व्यावहारिक इंजीनियर को इस योजना से जब तक प्लेटिनम के उपयोग सुरंग के निर्माण से अधिक

महत्वपूर्ण हैं, हटाने के लिए निरुत्साहित करना होगा। मानवीय मूल्यन में तकनीकी तटस्थ होती हैः यह संसाधनों के विषयगत उपयोग मूल्य के बारे में कुछ नहीं कहती। जैसाकि मिज़ीस ने कहा है, यह आर्थिक समस्या-उपलब्ध साधनों को कम त्वरित आवश्यकता की पूर्ति में लगाने या बर्बाद करने के स्थान पर अधिक त्वरित आवश्यकता को पूरा करने में लगाना, की उपेक्षा करती है। (मिज़ीस, ह्यूमन एक्शन, पृ. सं. 207)

मूल्य की व्यक्तिपरकता

संसाधन आबंटन का कार्य तुरंत महसूस की जाने वाली आवश्यकताओं को संतुष्ट करना है और इसलिए संसाधनों का उपयोग उनके सर्वश्रेष्ठ रोजगार में होना चाहिए। अब यह प्रश्न उठाना चाहिए कि सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं अथवा उपयोगों का निर्धारण किस प्रकार होता है। यह दिखाई देगा कि इन निर्धारणों के लिए वस्तुओं के मूल्य की माप के लिए कुछ साधनों का होना आवश्यक है, लेकिन यह स्थिति नहीं है। मूल्य की इकाई की माप के लिए इस तरह की कोई चीज नहीं होती और इस तथ्य का अभिप्राय है कि एक वस्तु के मूल्य को माप पाना असंभव होता है। मूल्य एक विषयगत चर है जिसकी कार्डिनल मात्रा में मापा नहीं जा सकता। एक वस्तु का मूल्य उस व्यक्ति के मस्तिष्क में होता है जो उसका मूल्यन करता है और मूल्यांकन की यह प्रक्रिया माप का विषय नहीं है। क्योंकि मूल्यांकन हमेशा ही व्यक्ति की अधिमान्यता का विषय रहा है, इसलिए मूल्यांकन की समस्या का हल क्रमसूचक संख्याओं के द्वारा ही हो सकता है। यह मूल्य का विषयगत सिद्धांत, जिसे मेंगा, जेवेंस और वालरा ने लगभग 1871 में अपने विश्लेषण का हिस्सा बनाया, पहले आर्थिक विज्ञान का भाग नहीं था। उस समय तक अर्थशास्त्री सभी वस्तुओं के मूल्य के स्रोत की खोज कर रहे थे।

मूल्य माप की समस्या को इस तथ्य से कि विभिन्न व्यक्ति प्रायः उसी वस्तु का अलग-अलग मूल्यन करते हैं जबकि वही व्यक्ति किसी एक वस्तु का अलग-अलग समय में भिन्न मूल्यन करता है, दर्शाया जा सकता है। सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम के क्रियाशील होने की स्थिति में एक व्यक्ति वस्तु की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई का पूर्व इकाई की तुलना में हमेशा ही कम मूल्य आंकेगा। यदि मूल्य को अंकों में व्यक्त किया जा सकता है और मापने योग्य हैं, तब माप की एक मानक इकाई होगी जो अपरिवर्तनशील होगी। यह स्पष्ट है कि एक वस्तु के मूल्य के माप

की कोई ऐसी अपरिवर्तनीय इकाई नहीं होती जहां एक ही समय पर विभिन्न व्यक्ति और विभिन्न समय पर एक व्यक्ति उसी बिंदु का प्रायः अलग-अलग मूल्यांकन करता है।

मूल्यन आवश्यक रूप से चयन करने अथवा वरीयता प्रदान करने की क्रिया है। एक व्यक्ति कह सकता है कि वह B अथवा C की तुलना में A को अधिक मूल्य देता है लेकिन वह मात्रात्मक रूप में यह नहीं कह सकता कि वह B अथवा C की तुलना में A को कितनी अधिक वरीयता देता है। वह गुणात्मक रूप से यह निर्देशित कर सकता है कि वह C की तुलना में A को तथा B की तुलना में A को वरीयता देता है। वह यह भी निर्देशित कर सकता है कि A और C की तुलना में वह A और B की तुलना को अधिक वरीयता देता है। इस स्थिति में वह अपनी वरीयताओं को एक प्रथम से अंतिम तक को एक क्रम में रखेगा। यह रैंकिंग क्रमानुसार है, कार्डिनल नहीं, जहां संख्याओं का उपयोग होता है। दुर्लभ संसाधनों का आबंटन उनके मूल्यों की माप की किसी तथाकथित विधि पर आधारित नहीं हो सकता। संसाधनों की बढ़ती मात्रा के कार्यरत होने का निश्चय समान या विभिन्न संसाधनों ने वैकल्पिक बढ़ते उपयोगों को क्रम प्रदान कर किया जा सकता है। संसाधन के द्वारा चूंकि उपभोग वस्तुओं का उत्पादन होता है, इसलिए इन संसाधनों का सापेक्ष महत्व उनके अंतिम उत्पादों के सापेक्ष महत्व पर निर्भर करता है। मूल्य के विषयगत सिद्धांत की विस्तृत व्याख्या अध्याय 3 में की गई है।

मौद्रिक कीमतों द्वारा आर्थिक गणना

बाजार में कीमत प्रक्रिया के द्वारा विभिन्न संसाधनों और उपभोग वस्तुओं के सापेक्ष महत्व का पता इनकी मौद्रिक कीमतों से चलता है। मुद्रा की सहायता से व्यक्तियों के लिए आर्थिक गणना करना संभव है क्योंकि यह विनिमय की आय माध्यम है। बाजार में जो भी वस्तुएं और सेवाएं खरीदी और बेची जाती हैं, वह मुद्रा के लिए विनिमय की जाती हैं। यह मौद्रिक कीमतें मूल्य का माप नहीं होतीं। मौद्रिक कीमतें, विनिमय अनुपात हैं जो बाजार विनिमय में भागीदारों द्वारा समय पर विशेष तौर पर वस्तुओं को दिए गए मूल्यांकन को व्यक्त करते हैं। वस्तुओं और सेवाओं के बारे में व्यक्तियों के बदलते विषयगत मूल्यांकन के कारण और वस्तु और सेवा विशेष की पूर्ति में परिवर्तन के कारण मौद्रिक कीमतों में लगातार परिवर्तन होते रहते हैं। व्यक्तियों में बदलाव की प्रवृत्ति होती है और वह काम करने के तरीकों में बदलाव के द्वारा सुधार लाना चाहते हैं तथा संतुष्टि प्राप्ति के लिए वह बाजार अर्थव्यवस्था में स्थायी स्थिर कीमतों को प्राप्त करने से

रोकते हैं। आर्थिक अथवा मौद्रिक गणना वास्तव में आगत और निर्गत के मध्य तुलना का विषय है, पूर्व व अपेक्षित संसाधनों के उपयोग के त्याग और परिणाम के मध्य तुलना का विषय है। यह दर्शाया जा चुका है कि वस्तु रूप में की गई गणना आर्थिक आबंटन के कार्य के लिए पर्याप्त नहीं होगी। वस्तुओं और सेवाओं की विशिष्ट मात्रा से संबंधित मौद्रिक कीमतें, मौद्रिक लागतों और मौद्रिक राजस्व को निर्धारित करती हैं जो संसाधनों के विशिष्ट रोजगार में कार्यरत संसाधनों की वांछनीयता पर प्रकाश डालती है।

आर्थिक गणना में पूर्वव्यापी और संभावित दोनों प्रकार की मौद्रिक गणनाएं सम्मिलित रहती हैं। पूर्व व्यापी गणना पूर्व समय के मौद्रिक लाभ अथवा हानि जानने के लिए की जाती है। इस अध्ययन के दो मुख्य उद्देश्य हैः (1) यह जानना कि पूर्व समय के परिणामों को किस हद तक भविष्य के परिणामों का सूचक माना जा सकता है और (2) मौद्रिक आय उस सीमा को प्रदर्शित करती है जिस सीमा तक वर्तमान आय के अभाव में उत्पाद की भावी दक्षता को बनाए रखा जा सकता है। आखिरी कार्य को पूंजी और आय के पूरक विचार से व्युत्पन्न किया गया है जो आर्थिक गणना का एक उपकरण है जिसकी चर्चा अगले अध्याय में की जा रही है। संभावित गणनाएं, जो पूंजी और आय की पूर्वव्यापी गणनाओं से प्रभावित हो सकती हैं, मौद्रिक लाभ और हानि का पूर्वानुमान लगाने का विषय है। ध्यान दें कि सभी आर्थिक गणनाओं का संबंध भविष्य से होता है। जैसा कि क्रिया का अर्थ लाभदायक परिवर्तन से है, उसी तरह सभी परिवर्तन भविष्य जो अगला घंटा, दिन वर्ष या और ज्यादा हो सकता है, से निर्देशित होते हैं। संसाधन उपयोग के साथ प्रत्येक कदम संभावित स्थिति का होता है।

पूंजी और आय के विचार

आधुनिक आर्थिक क्रियाओं का मूल संसाधनों को उत्पादन प्रक्रिया में लगाकर उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना है। उद्यमी-उत्पादक कोषों का निवेश करके उत्पादक साधन प्राप्त करके अपनी मौद्रिक संपत्ति बढ़ाने की उम्मीद करते हैं। उत्पादक भावी उत्पादन में प्रयुक्त होने वाले उत्पादन के साधनों के आर्थिक महत्व को अंक रूप में मौद्रिक कीमतों के द्वारा व्यक्त करते हैं। उत्पादक क्रियाओं में लगी मुद्रा की मात्रा को पूंजी कहा जाता है और पूंजी की कम से कम इस मात्रा को बनाए रखने के लिए आवश्यक राशि को अनुरक्षण पूंजी कहते हैं। मिज़ीस ने पूंजी के निम्न रूप में परिभाषित किया हैः

एक निश्चित व्यावसायिक इकाई के प्रचालन में निहित सभी देनदारियों और लेनदारियों के मौद्रिक मूल्यों का अंतर पूंजी कहलाता है। इस बात का कोई अर्थ नहीं है कि यह एक भूमि का टुकड़ा, भवन, उपकरण, किसी भी प्रकार के औजार, दावे, नकदी अथवा और कुछ भी हो सकता है। (मिज़ीस, ह्यूमन एक्शन, पृ. 262)

जब उत्पादक प्रयासों के परिणामस्वरूप उत्पन्न शुद्ध परिसंपत्ति का मौद्रिक मूल्य, इन प्रयासों में लगी पूंजी से अधिक होता है, तब कहा जाता है कि व्यावसायिक इकाई ने इन दोनों के अंतराल के समान आय अर्जित की है। आय वह राशि है जिसे पूंजी की मात्रा में कमी बिना उपभोग किया जा सकता है। यदि उपभोग, आय की राशि तक सीमित है, तब पूंजी बनी रहती है। इसके विपरीत यदि उपभोग की राशि, आय से अधिक है, पूंजी को उसके वर्तमान स्तर तक बनाए नहीं रखा जा सकता। आय और उपभोग के इस अंतर को पूंजी का उपभोग कहा जाता है। पूंजी संचयन उस समय होता है जब आय की तुलना में उपभोग का स्तर कम है अर्थात् जब आय का एक अंश अथवा समूची आय को बचाया जाता है। यदि व्यवसाय आय अर्जित करने में असफल हो जाता है और इसके स्थान पर मौद्रिक हानि हो जाती है। ऐसी स्थिति में यह पूंजी का उपभोग है तथा उत्पादक द्वारा नए कोषों का निवेश किए बिना पूंजी का अनुरक्षण नहीं किया जा सकता। आय और उपभोग प्रभाव के साथ अतिरिक्त निवेश या तो पूंजी अनुरक्षण, पूंजी संचयन के लिए या फिर पूंजी उपभोग में कमी के लिए किए जाते हैं। जैसाकि मिज़ीस ने कहा है, आय, बचत और पूंजी उपभोग की मात्रा को निश्चित करना आर्थिक गणना के प्रमुख कार्यों में से है।

हालांकि पूंजी जिसे उत्पादित उत्पादन के साधनों (जिन्हें प्रायः पूंजीगत वस्तुएं कहा जाता है) में शामिल किया जाता है, पूंजी के विचार से अर्थ व्यक्तियों के मन में विद्यमान एक विचार हो सकता है। व्यक्ति को साधनों, जिन्हें वह उत्पादन उद्देश्यों में प्रयुक्त करता है, के मौद्रिक महत्व की जानकारी है। आर्थिक गणना में यह विचार एक तत्व है जो भावी क्रियाओं के परिणामों का मूल्यांकन करने और पूंजी अनुरक्षण के द्वारा उत्पादन और उपभोग के उत्तरोत्तर चरण के लिए एक आधार प्रदान करता है। मूर्त पूंजीगत वस्तुएं वास्तव में एक बिखराव है। यह केवल पूंजी कोष का मूल्य है जिसे उपभोग की उचित व्यवस्था के द्वारा अनुरक्षित अथवा बनाए रखा जा सकता है। (मिज़ीस, ह्यूमन एक्शन, पृ. 261)

पूर्व क्रियाओं के परिणाम की स्थापना में पूर्व व तत्पश्चात की क्रियाओं में पूंजी की गणना शामिल रहती है। इन दो गणनाओं की तुलना लाभ (आय) अथवा हानि की प्राप्ति को निश्चित करती है। आर्थिक गणना का यह पूर्वव्यापी प्रकार भावी क्रियाओं की योजना बिंदु का उस सीमा तक प्रारंभिक चरण है जिस सीमा तक कर्त्ता भावी परिवर्तनों का सूचक है। यह बिंदु दर्शाता है कि पूर्व में चर्चित जानकारी की समस्या को आंशिक रूप से किस प्रकार सुलझाया जाता है।

पूर्व क्रियाओं से उत्पन्न लाभ और हानि का निर्धारण, शिक्षाप्रद लक्ष्यों के अलावा वह साधन प्रदान करता है जिससे कर्त्ता यह निश्चित करता है कि व्यावसायिक इकाई की भविष्य में उत्पादन करने की क्षमता कम होती है या नहीं। किसी अन्य की तरह, उत्पादक अपनी निजी आवश्यकताओं की संतुष्टि प्राप्ति में रुचि रखते हैं और लाभ और हानि की गणना उस सीमा को दर्शाती है जहां पूंजीगत आधार को प्रभावित किए बिना उपभोग व्यय का आनंद प्राप्त किया जा सकता है। गणना यह दर्शा सकती है कि अलाभप्रद प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप पूंजी में कमी या ऐच्छिक पूंजी संचयन की प्राप्ति के लिए अतिरिक्त निवेश की आवश्यकता पड़ती है। उत्तरोत्तर अवधि में क्रियाओं के परिणामस्वरूप लाभ और हानि की गणना के लिए तुलना का बिंदु पूंजी का हाल ही में किया गया निर्धारण है। अतः पूर्वव्यापी आर्थिक गणना केवल इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भावी क्रियाओं की योजना को संभव बनाती है। इस उपयोग के बिना यह केवल मृत इतिहास होगा।

प्रत्येक उत्पादक उद्यम क्रिया या परियोजना की प्रत्याशित भावी लागतों और प्रत्याशित प्राप्तियों की गणना से निर्देशित होता है। इन परिणामों के पूर्वानुमानों में पूर्व राजस्व और लागत का निर्धारण पर्याप्त सहायक हो सकता है। ज्यादातर उद्यमी-उत्पादक उन्हीं क्रियाओं को करते हैं जहां मौद्रिक उत्पाद पर्याप्त मात्रा में प्रत्याशित भौतिक साधनों की तुलना में अधिक होता है। (लाभ अर्जित करने पर दिए जाने वाला जोर प्रत्याशित मौद्रिक हानि वाली क्रियाओं को किसी प्रकार बाधित नहीं करता। कर्ता के दृष्टिकोण से प्रत्याशित गैर-आर्थिक लाभों व मौद्रिक हानियों को उचित ठहराया जा सकता है। अंतिम मूल्य हमेशा ही वैयक्तिक और विषयगत होते हैं। हालांकि, इस प्रकार की परिस्थितियों में मौद्रिक गणना अभी भी महत्वपूर्ण हो सकती है।) विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं की प्रत्याशित कीमतों के आधार पर भावी गणनाएं करके संसाधनों को तब उनके सबसे अधिक लाभ प्रदान करने वाले उपयोगों में निर्देशित किया जाता है। मिज़ीस ने मौद्रिक गणना के महत्व को इस रूप में स्पष्ट किया हैः

श्रम विभाजन की सामाजिक व्यवस्था में मौद्रिक गणना एक दिशा सूचक की तरह है। यह उत्पादन प्रक्रिया में उद्यमी के लिए कम्पास की तरह है। उद्यमी इसकी सहायता से उत्पादन के लाभकारी क्षेत्रों का चयन करता है। उद्यमी की क्रियाओं के प्रत्येक कदम की मौद्रिक गणना के आधार पर छानबीन की जाती है। नियोजित क्रिया का पूर्व विमर्शन प्रत्याशित लागतों और प्रत्याशित प्राप्तियों की वाणिज्यिक पूर्व गणना कहलाती हैं। पूर्व क्रियाओं के पूर्वव्यापी स्थापन का परिणाम लाभ और हानि का लेखा रखना हो जाता है। (मिज़ीस, ह्यूमन एक्शन, पृ. 229)

यहां यह दोहराना उचित होगा कि आर्थिक अथवा मौद्रिक गणना, माप की प्रक्रिया का एक हिस्सा नहीं होता। मौद्रिक संख्या हमें मूल्य की कोई मानक इकाई प्रदान नहीं करती। उत्पादक संसाधनों के असंख्य संभावित उपयोग यह अधिदेश देते हैं कि पसंद अथवा अधिमानता न कि मूल्य माप आर्थिक समस्या की प्रकृति को अभिलक्षित अथवा वैकल्पिक उपक्रमों को परिलक्षित किया जाता है।

जोखिम और अनिश्चितता

एक बाजार अर्थव्यवस्था में की जाने वाली आर्थिक गणना में परिशुद्धता नहीं होती क्योंकि भविष्य अनिश्चित होता है जो इस अर्थव्यवस्था की सभी क्रियाओं में व्याप्त रहता है। उद्यमी-उत्पादक भावी लागतों और आगम का पूर्वानुमान लगाता है जिसके पास भविष्य को जानने की कोई दैवीय शक्ति नहीं होती। यह अनिश्चितता लाभ और हानि की पूर्वव्यापी गणना को प्रभावित करती है क्योंकि पूंजी की गणना उस समवर्ती मुद्रा पर आधारित होती है जो शायद भविष्य में कायम न रहे। एक अकेला निर्णय करने वाला उपभोक्ताओं की भावी अधिमानताओं, तकनीकी में भावी परिवर्तन, भावी योजनाओं और अन्य उत्पादकों के क्रिया-कलापों और भविष्य में हो सकने वाली अन्य असंख्य बाह्य घटनाओं के बारे में सही व पूरी जानकारी नहीं रख सकता। एक बाजार अर्थव्यवस्था में बीमांकित तालिका बनाने में जिन आनुभविक आंकड़ों को इकट्ठा किया जाता है वह उद्यमी क्रिया-कलाप के उद्देश्य से पर्याप्त नहीं होते। बीमांकित विज्ञान सजातीय घटनाओं के निर्धारक वर्ग का पूर्वानुमान करता है। प्रत्येक वर्ग पूर्व में उसी प्रकार की बड़ी संख्या में घटित उन घटनाओं के आधार पर बनाया जाता है जिनका सांख्यिकीय विश्लेषण करना संभव होता है। सांख्यिकीय विश्लेषण में इन घटनाओं को प्रतिशत रूप में प्रदर्शित किया जाता है। लेकिन उद्यमी के क्रिया-कलापों में सजातीय प्रकृति के कार्यों की कोई प्रधानता नहीं होती। जिस सीमा तक वह

स्वयं को वर्णनीय बीमांकित घटनाओं से जोड़ता है, उस सीमा तक वह हानिकारक घटनाओं की संभावित लागत का अनुमान लगाकर बीमा का सहारा लेता है। लेकिन उसके ज्यादातर मामलों का संबंध तुलनात्मक रूप से दुर्लभ प्रकृति से होता है इसलिए समूहीकरण अथवा वर्गीकरण के आधार पर विभिन्न वर्गों में बांटना असंभव होता है.

फ्रेंक नाइट ने इस विचार का विकास जोखिम और अनिश्चितता के बीच भेद करने के लिए किया है। (फ्रेंक ए. नाइट, रिस्क, अनसर्टेनिटी ऐंड प्रॉफिट, न्यूयार्क, अगस्ट्स एम. केली, 1964) बड़ी संख्या में एक जैसी घटित हो सकने वाली घटनाओं से संबंधित सांख्यिकीय आंकड़ों के आधार पर जोखिम जैसे विषय की संख्यात्मक गणना की जा सकती है। यह बीमांकित संभाव्यताओं की प्रकृति है। अनिश्चितता का संबंध उन घटनाओं से होता है जो विशिष्ट होती हैं। हर स्थिति अपने आप में एक उदाहरण होता है जो बड़ी संख्या में सजातीय घटनाओं या वर्ग का सदस्य नहीं होता। परिस्थितियों के विशिष्ट समूह से संबंधित पर्याप्त पूर्व अनुभवों के अभाव के कारण अनिश्चितता की गणना संख्यात्मक रूप में नहीं की जाती। (तथाकथित विषयगत संभाव्यता मंगलभाषित होती है और दिए गए परिणाम के घटित होने की संभावना को संख्या में व्यक्त किया जाता है। इसका नाम दुर्भाग्यवश गलत प्रयुक्त शब्द हैं जो यह संकेत देता है कि किसी भी स्वतंत्र रूप से गणना की जा सकती है।)

प्रत्येक उपक्रम की सफलता की संभाव्यता की गणना करने के लिए आवश्यक व्यापक आनुभविक आंकड़े उपलब्ध नहीं है। नाइट ने समस्या को इस रूप में रखा हैः

गलती का अनुमान अथवा मत दायित्व, संभाव्यता या मौके से बिल्कुल भिन्न होता है। यहां पर्याप्त सजातीयता के उदाहरणों किसी भी रूप में समूह निर्माण की कोई संभावना नहीं होती ताकि सही संभाव्यता का मात्रात्मक निर्धारण हो सके। व्यावसायिक निर्णय, उदाहरण के लिए उन स्थितियों से संबंधित होते हैं जो आम भाषा में किसी भी सांख्यिकीय सारणीयन के लिए बहुत विशिष्ट होते हैं। वस्तुगत दृष्टि से संभाव्यता अथवा मौके की माप के विचार लागू करने योग्य नहीं है। (मिज़ीस, ह्यूमन एक्शन, पृ. 226-231)

अनिश्चितता एक ऐसा भारी अवरोध है जिसका बाजार अर्थव्यवस्था में प्रत्येक उद्यमी-उत्पादक को सामना करना पड़ता है और उसका भविष्य को देखने का प्रयास एक विषयगत मामला है जिसमें गणितीय समीकरण और नहीं होते। एक व्यवसायी ऐसे विषयों से संबंध नहीं रखता जिनके

व्यवहार का इंजीनियर या भौतिकशास्त्री की तरह पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। उत्पादक के ध्यान का विषय अन्य व्यक्तियों की आवश्यकताएं और अन्य उत्पादकों की योजनाएं होती हैं, जिनके बारे में यह जानना संभव नहीं होता कि वह क्या परिवर्तन करेंगे। प्रतियोगी उत्पादकों द्वारा की जाने वाली खोजों और खोजों के अनुप्रयोगों का कम साहसी व्यवसायियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उपभोक्ता की अधिमानताओं में होने वाले बदलाव और संसाधनों की उपलब्धता जैसी समस्याओं का उत्पादकों को निरंतर सामना करना पड़ता है। अन्य व्यक्तियों के क्रिया-कलापों का पूर्वानुमान न लगा सकने के कारण ही मुख्यतया अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है। मिज़ीस द्वारा की गई निम्न टिप्पणी का मुख्य बिंदु यही हैः

वास्तविक जगत में क्रियाशील व्यक्ति को इस तथ्य का सामना करना पड़ता है कि जैसे वह स्वयं अपनी क्रियाएं कर रहा है, उसी प्रकार साथी व्यक्ति भी स्वयं प्रेरित होकर क्रियाएं करते हैं। अन्य व्यक्तियों के द्वारा किए जाने वाले क्रिया-कलापों के साथ क्रिया-कलापों का सामंजस्य बैठाने की आवश्यकता उसे प्रभावशाली बनाती है जिसके लिए उसकी सफलता या असफलता कम या ज्यादा मात्रा में भविष्य को समझने की उसकी योग्यता पर निर्भर करती है। प्रत्येक क्रिया-कलाप सट्टापरक होता है। मानवीय घटनाओं में कोई स्थायित्व नहीं होता और इसके परिणामस्वरूप कोई सुरक्षा भी नहीं होती (मिज़ीस, ह्यूमन एक्शन, पृ. 113)

इसका अभिप्राय यह नहीं है कि भविष्य इतना अनिश्चित है कि प्रत्येक व्यावसायिक क्रिया एक जुआ अथवा प्रत्येक घटना इतनी असामान्य है कि नियोजित क्रिया-कलापों का कोई आधार नहीं होता। क्रिया-कलापों के लिए अनुभव हमें अनमोल सलाह देता है। भावी कीमतों का पूर्वानुमान लगाने के लिए पूर्व कीमतें प्रारंभिक बिंदु होते हैं। लेकिन उद्यमी-उत्पादक की समस्याओं के हल के लिए अनुभव इतना भिन्न और जटिल होता है कि वह वैकल्पिक क्रिया-कलापों की सफलता की संभाव्यता की गणना नहीं कर पाता। बाजार अर्थव्यवस्था में कोई स्थायी संबंध नहीं होते। उत्पादक की पूर्व अनुभवों पर निर्भरता आवश्यक रूप से निर्णायक और गुणात्मक होती है।

आर्थिक गणना की शुद्धता

सभी पूर्वभासी आर्थिक गणनाओं का संबंध अनिश्चित भविष्य से होता है, इसलिए इस प्रकार की सभी गणनाएं शुद्ध और अनंत होती हैं। कोई भी उद्यमी भविष्य की सही-सही जानकारी नहीं रखता, इसलिए पूर्वानुमानों में गलती होना अनिवार्य है। सफलता या लाभ उन्हीं को प्राप्त होता है

जिनकी दूरदृष्टि कम भ्रांतिपूर्ण अथवा अधिक सही है। पूर्व घटनाओं और लेन-देनों के परिणामस्वरूप उत्पन्न और पूर्व लाभों के निर्धारण में उपयोग में लाई गई पूंजी अंतरिम स्तर की संपत्ति है क्योंकि अनिश्चित भविष्य में इसका स्थायित्व निश्चित नहीं होता। मिज़ीस ने व्यावसायिक वित्तीय विवरणों में अंकों की शुद्धता का वर्ण किया हैः

तुलन-पत्रों और लाभ-हानि विवरणों में मुख्य चीज संपत्ति और देयताओं का मूल्यांकन करना है। ऐसे सभी शेष और विवरण अंतरिम शेष और अंतरिम विवरण होते हैं। यह न केवल व्याख्या करते हैं वरन् वर्तमान हालात को सामने भी रखते हैं। जीवन और क्रिया-कलाप चालू रहते हैं और ठहरते नहीं हैं। (मिज़ीस, ह्यूमन एक्शन, पृ. 214)

मौद्रिक गणनाओं में शुद्धता और निश्चितता का अभाव हो सकता है लेकिन इसका यह अभिप्राय बिल्कुल भी नहीं है कि यह उत्पादक के दृष्टिकोण से कि भविष्य में अन्य लोगों की आवश्यकता संतुष्टि का क्या होगा, भावी क्रियाओं को निर्देशित करने के कार्य को पूरा नहीं करता। यह आर्थिक गणना की व्यवस्था का दोष नहीं है कि अनिश्चित गणनाएं विद्यमान रहती हैं। यह आवश्यक रूप से इसलिए उत्पन्न होती हैं क्योंकि मानवीय क्रियाएं हमेशा ही अनिश्चित भविष्य की स्थिति में की जाती हैं। विस्तृत श्रम-विभाजन वाले एक सामाजिक संगठन में उत्पादक को सामान्य साम्यता के आधार पर गणना करने के एक साधन की आवश्यकता पड़ती है। मौद्रिक गणना यह एक साधन के रूप में करती हैं परंतु यह सीमित या निश्चित नहीं होती। संसाधनों को उन उपयोगों की ओर निर्देशित किया जाता है जिन्हें साधनों के स्थायी मौद्रिक गणना के रूप में ज्यादा बेहतर और लाभकारी समझते हैं। मौद्रिक गणना केवल एक बाजार अर्थव्यवस्था में ही की जा सकती हैं जहां उत्पादन के साधनों को मौद्रिक कीमतों के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। वस्तु विनिमय प्रणाली वाली अर्थव्यवस्था अथवा रॉबिन्सन क्रूसो के टापू वाली अर्थव्यवस्था में कोई मौद्रिक गणना नहीं की जा सकती। समाजवादी सिद्धांतवादियों ने भी यह स्वीकार किया है कि एक सामाजिक अर्थव्यवस्था में उत्पादक संसाधनों के आबंटन के लिए मौद्रिक कीमतों के निर्धारण की आवश्यकता पड़ती है जिसके द्वारा केंद्रीय सत्ता मांग और पूर्ति के बीच में असमानता को ठीक करते हैं।

मौद्रिक गणना के तर्कसंगत प्रभाव

आर्थिक गणना के महत्व की मान्यता ऑस्ट्रियन अर्थशास्त्रियों तक ही सीमित नहीं है। मैक्स बेवर ने पश्चिमी पूंजीवाद में तकनीकी विकास के तर्कसंगत प्रभाव में मौद्रिक गणना या पूंजी खातों को एक साधन के रूप में स्वीकार किया हैः

वैयक्तिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की यह एक आधारभूत विशेषता है कि इसे जटिल गणना के आधार पर तर्कसंगत बनाया जाता है। दूरदर्शिता के आधार पर निर्देशित किया जाता है और आर्थिक सफलता के लिए सचेत किया जाता है जो किसानों की जीवन-निर्वाह की स्थिति के बिल्कुल ही विपरीत है (मैक्स बेवर, द प्रोटेस्टेंट एथिक ऐंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म, न्यूयार्क, चार्ले स्क्रिबनर संस, 1958 पृ. 76)।

मुद्रा और मौद्रिक गणना के उपकरण ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा विविध प्रकार के संसाधनों का तुरंत आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए तर्कसंगत ढंग से आबंटन किया जाता है। तकनीकी का विकास भी ऐसे साधनों पर निर्भर करता है। मौद्रिक कीमतों जैसे विनिमय के सामान्य माध्यम मुद्रा के अभाव में गणना करना संभव नहीं हो पाता और न ही श्रम विभाजन के लाभों को महसूस कर पाते। जैसा मिज़ीस ने कहा हैः सभी समस्याओं जिन्हें आर्थिक कहा जाता है, में आधारभूत मुद्दा आर्थिक गणना समाहित है।

आर्थिक गणनाएं भी सीमाओं से परे नहीं हैं। ऐसी वस्तुएं जिन्हें खरीदा और बेचा नहीं जा सकता, मौद्रिक गणना के क्षेत्र से बाहर रहती हैं। एक व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति का अच्छे चरित्र के लिए समर्पित होना- यह संभव है कि वह किसी भी कीमत पर समझौता न करे। एक ऐसे समाज में जहां दास प्रथा प्रतिबंधित है, मानवीय जीवन की कोई मौद्रिक कीमत नहीं हो सकती। यदि एक व्यक्ति किसी चीज को उसकी सुंदरता या किसी भावनात्मक कारण से पसंद करत है तब वह किसी भी कीमत पर उसका विनिमय नहीं करेगा। लेकिन इस प्रकार अपवाद वस्तुओं और सेवाओं के उपयोग में कीमतों की प्रभावशीलता को कम नहीं करते।

बाजार कीमतों के द्वारा समन्वयात्मक संचार

गणना के उद्देश्य से एक आम साम्यता (denominator) की आवश्यकता के अलावा हमने देखा है कि विशिष्टीकरण और श्रम विभाजन पर आधारित सामाजिक सहयोग के लिए भी होती है जहां

बहुत सारे व्यक्तियों की योजनाओं और क्रिया-कलापों को संगत पैटर्न में समन्वित किया जा सके। विशिष्ट क्रिया-कलापों के पारस्परिक संबंधों के लिए ऐसी व्यवस्था की आवश्यकता पड़ती है जिसमें उनकी क्रियाओं के अनुसार परिवर्तन लाए जा सकें। प्रत्येक विकेंद्रीकृत आयोजक अपने निकट के माहौल के बारे में जानकारी के आधार निर्णय नहीं ले सकता। उस आयोजक के निर्णयों को अन्य आयोजकों के निर्णयों के साथ सुमेलित करना पड़ता है ताकि बड़ी आर्थिक व्यवस्था का प्रचालन सहज और प्रभावी हो सके।

मौद्रिक कीमतें एक माध्यम हैं जिसके द्वारा आवश्यक सूचना का संचार वैयक्तिक आयोजकों की क्रियाओं में प्रभावी समन्वय के लिए किया जाता है। जैसाकि हायक ने कहा है कि निर्णय लेने वाला प्रत्येक विशिष्ट व्यक्ति संसाधन उपयोग में होने वाले परिवर्तनों से संबंधित सभी तथ्यों को आवश्यक रूप से जानना नहीं चाहता। प्रत्येक के लिए जो उचित है वह यह कि वैकल्पिक वस्तुओं जिन्हें उत्पादित करता है या उपयोग में लाता है, को कितनी कम या अधिक जल्दी मांगा जाता है। (एफ.ए. हायक, द यूज ऑफ नॉलेज इन सोसाइटी, इंडिविड्यूलिज्म ऐंड इकोनॉमिक आर्डर, शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 1948, पृ. 87)।

आर्थिक प्रश्न हमेशा से ही उपलब्ध विशिष्ट वस्तुओं के सापेक्ष महत्व का प्रश्न है जिन्हें मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए उपयोग किया जाता है। प्रत्येक आयोजक यह जानना आवश्यक नहीं समझता कि वस्तुओं, जिन्हें वह उत्पादित करता है या उपयोग में लाता है, का सापेक्ष महत्व क्यों बदल जाता है। वह एक सीमा तक ऐसे सूचक चाहते हैं जो इसके सापेक्षिक महत्व को दर्शा सके। इस सूचना का महत्वपूर्ण उद्देश्य यह देखना है कि प्रत्येक वैयक्तिक आयोजक वस्तुओं जिनसे वह जुड़ा है, के सापेक्ष महत्व के प्रकाश में कार्य कर सके। बाजार कीमतें बाजार में विनिमय की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं के सापेक्षिक महत्व को प्रदर्शित करती है। अतः वस्तुओं और सेवाओं की सापेक्ष कीमतों में होने वाला परिवर्तन इनकी मौद्रिक कीमतों में होने वाले परिवर्तन में दिखाई देता है।

कीमत व्यवस्था द्वारा निष्पादित कार्य को कुछ संसाधनों में होने वाली अचानक कमी मानकर दर्शाया जा सकता है। वह व्यक्ति जो इस कमी-अभाव की समस्या का समाधान करेंगे, उन्हें इसके कारणों को जानने की आवश्यकता नही है। इस स्थिति में संसाधन की इकाई की कीमत बढ़ जाएगी। वह उद्यमी जो इस साधन का उपयोग तुलनात्मक रूप अधिकतम प्राप्ति के लिए कर

रहे थे, वह अन्य उद्यमियों जो कम लाभकर उत्पादों में प्रयोग कर रहे थे, को पीछे छोड़ देंगे। यहां अभाव का अर्थ है कि जब तक अभाव की स्थिति विद्यमान रहती है, तब तक संसाधनों के सीमांत उपयोगों के लिए पहले की तुलना में संसाधनों की कमी बनी रहेगी। संसाधन की कीमत में वृद्धि इसके सीमांत उपयोगों में कमी लाती है। हायक ने कीमत व्यवस्था की भूमिका को निम्न रूप में दर्शाया हैः

...चमत्कार यह है कि कच्चे माल की दुर्लभता की इस स्थिति में, जहां कोई आर्डर जारी नहीं किया गया, जहां कुछेक व्यक्ति ही कारण जानते हैं, जहां हजारों लोगों के व्यक्तित्व के बारे में महीनों की जांच के बाद भी नहीं जाना जा सकता, वह सामग्री या इससे बने उत्पाद का उपयोग कम करते हैं, अर्थात् वह सही दिशा में जा रहे हैं...मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि यह जान-बूझकर की गई मानवीय परिकल्पना का परिणाम होता और यदि जनता कीमतों में होने वाले परिवर्तनों से निर्देशित होते हुए समझती है कि इनके निर्णयों का महत्व उनके तात्कालिक लक्ष्य से कहीं ज्यादा है, तब इस तंत्र का मनुष्य के मन की सबसे बड़ी विजय के रूप में स्वागत होता। इसका दुगुना दुर्भाग्य है। एक तो यह मानवीय परिकल्पना की उपज नहीं है और यह कि इससे निर्देशित व्यक्ति यह नहीं जानते कि जो वह जो कर रहे हैं, वह ऐसा क्यों कर रहे हैं (एफ.ए. हायक, द यूज ऑफ नॉलेज इन सोसाइटी, पृ. 87)।

व्यक्ति कमी पैदा होने के कारण अपनी योजना बनाते हैं और इस तथ्य के साथ कि उत्पादन के एक विशिष्ट साधन की आपूर्ति कम हो गई है, कार्य करते हैं। वस्तु की अधिक कीमतें न केवल मांगे जाने वाली मात्रा में सामंजस्य स्थापित करने के संकेत देती हैं, वरन् यह विक्रेताओं को संसाधन की उपलब्ध आपूर्ति बढ़ाने के लिए भी प्रेरित करती है। संसाधन की आपूर्ति बढ़ाने की खोज जितनी सफल होगी, वस्तु कीमत भी उसी अनुसार कम होगी, जिसका तात्पर्य है कि वस्तु को अब कम प्राप्ति वाले क्षेत्र में भी लगाया जा सकेगा। कीमत व्यवस्था उसी तरह से प्रचालित होती है जैसे वह उपभोक्ताओं को उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की प्राप्ति में सहायक होती है। हायक ने कीमत व्यवस्था में संचार सूचना की प्रभावशीलता का आगे भी वर्णन किया हैः

...इस व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण तथ्य अर्थव्यवस्था जो इस ज्ञान के साथ प्रचालित होती है कि वैयक्तिक भागीदारों को सही कदम उठाने के लिए कितनी कम जानकारी की आवश्यकता होती है। संक्षिप्त रूप में, संकेतक के रूप में केवल बहुत आवश्यक जानकारी आगे और आगे उन

सब तक पहुंच जाती है जो केवल उससे संबंधित हैं... दूरसंचार की व्यवस्था जो वैयक्तिक उत्पादकों को कुछ सूचकों के संचलन की निगरानी के लिए समर्थ बनाती हैं...वह अपनी क्रियाओं को ऐसे परिवर्तनों, जो कीमत संचलनों में प्रतिबिंबित होते हैं, के बारे में कभी भी नहीं जानते, के अनुसार समायोजित करते हैं। (एफ.ए. हायक, द यूज ऑफ नॉलेज इन सोसाइटी, पृ. 87)।

हमें यह पहचानने में गलती नहीं करना चाहिए कि कीमत व्यवस्था के प्रभावी प्रचालन को राजनीतिक हस्तक्षेपों के द्वारा विफल किया जा सकता है। तेल और गैसोलिन के क्षेत्र में विगत समस्याएं सरकार में बैठे उन लोगों के कारण हुईं जो बाजार व्यवस्था को स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं करने दे रहे थे। ओपेक और ऊर्जा विभाग द्वारा तय की गई कीमतें खुले बाजार में तय नहीं की गईं और पूर्ति तथा गैसोलिन क्षेत्र में व्यवधान खुले बाजार में लिए गए निर्णयों के कारण उत्पन्न नहीं हुए थे। मूल्यों पर नियंत्रण की कोशिशें वस्तुओं एक स्तर तक कम रखती हैं जिससे क्रेताओं में यह कुंठा उत्पन्न हो जाती है कि वह इन कीमतों पर अपनी मांग को पूरा नहीं कर सकते। यही मूल्य नियंत्रण तेल उत्पादकों को खोज करने और बाजार में पेट्रोलियम की आपूर्ति बढ़ाने के लिए हतोत्साहित करते हैं। कीमत व्यवस्था में हस्तक्षेप ईंधन की कमी की समस्या को और गंभीर बना देता है।

मौद्रिक कीमतें, गणना करने के उद्देश्य से एक आम साम्यता की आवश्यकता को पूरा करती है। यह एक प्रक्रिया को पूरा करती है जिससे दूर-दूर तक फैले व्यक्तियों के वैयक्तिक निर्णयों को समन्वित किया जा सकता है। बाजार में स्थापित कीमतें समन्वयकारी होती हैं क्योंकि विभिन्न निर्णय लेने वालों द्वारा की गई क्रियाओं के पीछे आर्थिक गणना एक प्रमुख कारक है। विगत कीमतें, तात्कालिक भविष्य में कीमतों का पूर्वानुमान लगाने में बहुत उपयोगी होती हैं। आर्थिक क्रियाओं में लाभदायक बदलाव के अवसरों में परिवर्तन से क्रियाओं में परिवर्तन आता है जो बाद में भावी कीमतों को प्रभावित करती हैं। कीमतों में इन परिवर्तनों के द्वारा बाजार के अन्य प्रतिभागियों को अतिरिक्त सूचना संचारित की जाती है। जानकारी की समस्या कीमत संकेतकों के कारण और कम हो जाती है। कीमत संकेतक अब नए निर्णयों को प्रतिबिंबित करते हैं और दूसरों को बाजार के नए आंकड़ों के अनुरूप अपने क्रिया-कलापों को नियोजित करने के लिए प्रेरित करते हैं। अलग-अलग लिए गए निर्णयों की प्रवृत्ति एक-दूसरे के संगत होती है। यह विनिमय के माध्यम जिसमें आर्थिक गणनाएं एक आय साम्यता के रूप में की जाती हैं, से संभव होता है। एक आय साम्यता के अभाव में, विभिन्न व्यक्तियों की समन्वयकारी योजनाओं की इतनी ज्यादा

आवश्यकता नहीं होती। वस्तु रूप में की गई गणना पर निर्भरता विशिष्टीकरण के विकास और श्रम विभाजन को महत्वपूर्ण रूप नियंत्रित करेगी। विनिमय केवल वस्तुओं के शुद्ध लेन-देन संबंधों तक सीमित रह जाएंगे। सामाजिक सहयोग की विस्तृत और लाभदायक व्यवस्था में दुर्लभ संसाधनों का आदर्शतम आबंटन बाजार अर्थव्यवस्था और इसके प्रतिरूप मौद्रिक गणना से उत्पन्न सबसे बड़ा लाभ है।

सहायक ग्रंथावलीः

- नाइट, फ्रैंक ए. रिस्क, अनसर्टेनिटी ऐंड प्रोफिट। न्यूयार्कः अगस्ट्स एम. केली, 1964.
- मिज़ीस, लुडविग वॉन, ह्यूमन एक्शनः ए ट्रीटाइज ऑन इकोनॉमिक्स, तीसरा संशोधित संपादित संस्करणः हेनरी रेग्नरी ऐंड कंपनी, 1966.

4

मूल्य का विषयगत सिद्धांत

संतुष्टि और मूल्यन

बाजार अर्थव्यवस्था में होने वाली सभी आर्थिक क्रियाओं की व्याख्या अंतिम तौर पर मूल्य के विषयगत सिद्धांत पर टिकी हुई है। विभिन्न उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य वस्तुगत और मूलभूत रूप से स्वयं वस्तुओं में विद्यमान नहीं होता। यह व्यक्ति द्वारा किए गए मूल्यांकन में होता है। यह मूल्यांकन एक विषयगत मामला है जिसको वह वस्तुगत रूप में अथवा माप के रूप में नहीं ले सकता। मूल्यन के अंतर्गत उपलब्ध वैकल्पिक वस्तुओं में बढ़ोतरी की तुलना में एक वस्तु में वृद्धि को अधिमानता दी जाती है। मूल्यन का परिणाम विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं की निश्चित मात्रा को एक निश्चित क्रम में रखने से है। मानवीय मूल्यन की प्रकृति की व्याख्या करने और समझने के लिए सिद्धांत मूल्य के पैमाने के परिकल्पित विचार का सहारा लेती है। वैकल्पिक साधनों के क्रम का निर्धारण व्यक्ति की संतुष्टि की प्रत्याशा पर निर्भर करता है। एक व्यक्ति उस विकल्प का चयन करेगा जिसके बारे में उसका विश्वास है कि वह उसे अधिकतम संतुष्टि प्रदान करेगा।

मूल्यन की वस्तुनिष्ठता संतुष्टि की प्रकृति पर निर्भर करती है। संतुष्टि विषयगत होती है और इसे अंकात्मक रूप से मापा नहीं जा सकता। कोई वस्तु किस सीमा तक संतुष्टि प्रदान करती है, वह व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है। व्यक्ति विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं से संतुष्टि एक समान

नहीं होती। अनुभव से यह पता चलता है कि व्यक्ति की अधिमानताओं में समय में परिवर्तन के साथ बदलाव होता रहता है। उसकी वैकल्पिक रुचि के क्रम में किसी भी क्षण में परिवर्तन हो सकता है। व्यक्ति के मूल्यों का पैमाना भी बढ़ोतरी या घटोतरी से भी बदल सकता है।

एक व्यक्ति से मूल्यन के विषय को जोड़ने के द्वारा यहां यह समझना नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति का संबंध केवल उसकी अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि से ही होता है। एक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों की सहायता करने में संतुष्टि प्राप्त कर सकता है। संतुष्टि प्रायः स्वार्थहीन और स्वार्थी होने से भी प्राप्त हो सकती है। लेकिन जो बात रह जाती है वह यह है कि संतुष्टि चाहे किसी भी प्रकार की हो, प्रत्येक चयन व्यक्ति, जो चुनाव कर रहा है, के विषयगत मूल्यन पर निर्भर करता है। वह अपने दिमाग से इस चिंता को भगाना चाहता है कि क्या यह चिंता उसकी अपनी तात्कालिक समस्या से या किसी अन्य की समस्या से जुड़ी हुई है। उसका चयन इस अधिमानता से निकलता है कि उसे अन्य समस्या के स्थान पर एक विशिष्ट चिंता को दूर करना है ताकि वह अपना ध्यान केंद्रित कर सके।

सीमांत उपयोगिता का सिद्धांत

एक वस्तु या सेवा विशेष की निश्चित मात्रा का मूल्यन किया जाता है। चयन और निर्णय एक निश्चित वस्तु या सेवा की संपूर्म आपूर्ति से संबंधित नहीं होते। प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के समूह में तथाकथित मूल्य के विरोधाभास में सीमांत स्थिति का अभाव देखने को मिलता है। वह इस प्रश्न का समाधान करने में असफल रहे कि हीरे की प्रति इकाई लागत पानी से अधिक क्यों है जबकि हर कोई यह जानता है कि हीरे की तुलना में पानी अधिक उपयोगी और मूल्यवान है। सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम की सहायता से ही इस वैचारिक दुविधा को समाप्त किया जा सकता है। एक वस्तु विशेष की अतिरिक्त इकाई को उस उपयोग में लगाया जाता है जो इसकी पूर्ववर्ती इकाई के उपयोग की तुलना में कम उपयोगी और कम आवश्यक है।

इस सिद्धांत को प्रतिपादित करने के लिए मनोवैज्ञानिक अथवा शारीरिक तृप्ति की व्याख्या का सहारा नहीं लेना पड़ता। सउद्देश्य के विचार से की जाने वाली क्रिया में यह सिद्धांत निहित है कि एक व्यक्ति एक दी हुई वस्तु अथवा सेवा का हमेशा ही अति आवश्यक रूप में उपयोग करेगा। प्रत्येक व्यक्ति कम संतुष्टि की तुलना में अधिक संतुष्टि को अधिमानता देता है, इसलिए एक

निश्चित समय पर मूल्यों के पैमाने के दिए होने पर वह उत्तरोत्तर इकाइयों से कम और कम संतुष्टि प्राप्त करेगा।

सीमांत उपयोगिता ह्रास सिद्धांत से किसी भी वस्तु की एक इकाई के मूल्य से संबंधित एक महत्वपूर्ण नियम को व्युत्पादित किया जाता है। वस्तु विशेष की दी हुई मात्रा की एक-तिहाई के मूल्य का निर्धारण उस वस्तु के सबसे कम महत्वपूर्ण उपयोग में उपयोगिता के आधार पर होता है। इस नियम को एक अलग रूप में भी रखा जा सकता है। एक दी हुई वस्तु की किसी इकाई का मूल्य संतुष्टि के उस त्याग के बराबर होगा जो उस इकाई की अनुपस्थिति में होता। बॉम-वार्क ने नियम की व्याख्या एक ऐसे खोजी किसान की कल्पना के रूप में की है जो अपनी फसल से 5 बोरा अनाज पैदा करता है (यूजेन वॉन बॉम-वार्क, कैपिटल ऐंड इंटरेस्ट, खंड-2, बुक 3, साउथ हालैंड, लिब्रटेरियन प्रैस, 1959, पृ. 143-45)। इस खाद्य आपूर्ति की योजना बनाते समय सबसे पहले सावधानीपूर्वक वह कम-से-कम अनाज की उतनी मात्रा अपने पास रखेगा जो उसे अगली फसल तक जिंदा रखने के लिए आवश्यक होगा। इस उद्देश्य के लिए वह एक बोरा अनाज आबंटित करता है। वह दूसरा बोरा अपनी पूरी शक्ति और संपूर्ण स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए आबंटित करेगा। तीसरा बोरा वह अपने भोजन में विविधता लाने के लिए करेगा। वह इसका उपयोग मुर्गीपालन में करेगा। वह चौथा बोरा ब्रांडी के आसवन (distillation) के लिए निश्चित करेगा और अंत में वह पांचवां बोरा तोतों के समूह को अनाज खिलाने के लिए करेगा जिनकी हरकतें उसे आनंद देती हैं। यह उदाहरण सीमांत उपयोगिता ह्रास सिद्धांत के प्रचालन को दर्शाता है। इस उदाहरण में किसान सबसे पहले अधिक महत्वपूर्ण उपयोग के लिए योजना बनाता है और उसके पश्चात उससे कम महत्वपूर्ण उपयोग के लिए योजना बनाता है। अनाज के प्रत्येक बोरे का मूल्य किसान द्वारा मित्र तोतों के अनाज खिलाने से उत्पन्न संतुष्टि के बराबर होती है। यदि किसी कारणवश वह एक बोरा अनाज खो देता है तब उसे इस संतुष्टि का त्याग करना पड़ेगा। क्योंकि उसका अनाज सजातीय वस्तु है, इसलिए उसे अन्य चार महत्वपूर्ण उपयोगों में से इस हानि के कारण संतुष्टि का कोई त्याग नहीं करना पड़ेगा। वह सामान्यतया सबसे कम महत्वपूर्ण उपयोग का चयन यह निश्चित करने के लिए करेगा कि उसकी मूल योजना के किस हिस्से को प्रभावित नहीं किया जा सकता। एक इकाई के मूल्य का निर्धारण उसकी सीमांत उपयोगिता अथवा संतुष्टि के आधार पर होता है।

सीमांत उपयोगिता ह्रास सिद्धांत और मूल्य के इसके पूरक नियम ने हीरे की कीमत और पानी की कीमत में असंगतता को मूल्य के विरोधाभास के द्वारा दूर किया गया है। दुर्लभता का तत्व वह चाबी है जो वस्तु विशेष के उपयोग को नियंत्रित करती है। हीरे की उपलब्धता की तुलना में पानी की सापेक्ष प्रचुरता का अभिप्राय है कि पानी की बढ़ी मात्रा का उपयोग, हीरे की सीमित मात्रा की तुलना में कम और कम आवश्यक उपयोगों में किया जाएगा। कभी भी कोई सभी पानी और सभी हीरे में से एक का चुनाव करेगा, अतः यहां कोई अर्थपूर्ण विरोधाभास नहीं है। कीमतों का संबंध वस्तुओं की निश्चित मात्रा से होता है और इनका विभिन्न वस्तुओं की समूचे वर्गों से कोई संबंध नहीं होता।

एक वस्तु की बड़ी मात्रा जिसमें छोटी-छोटी कई इकाइयों शामिल हैं, के बाद भी मूल्य सिद्धांत का महत्व कम नहीं हो जाता। इस स्थिति में, सीमांत इकाई में अधिक मात्रा होगी, और यदि इस बढ़ी इकाई को तोड़कर विभिन्न उपयोगों में प्रयुक्त किया जाए तो इनसे प्राप्त संतुष्टि, सीमांत इकाई मूल्य के समान होगी। माना हमारे उदाहरण का किसान एक साथ 3 बोरी अनाज का उपयोग नहीं करना चाहता, तब इन 3 बोरी अनाज का मूल्य तोतों को बनाए रखने से मिलने वाली संतुष्टि या मूल्यन के 3 गुना के समान नहीं होगा। वह इस स्थिति में नहीं है कि वह अनाज के केवल एक बोरे की ही मूल्यन करे। वह अनाज के सबसे कम तीन महत्वपूर्ण उपयोगों का त्याग करेगा और बाकी के बचे दो बोरों को अपनी खाद्य की आवश्यक जरूरत को पूरा करने में लगाएगा। अनाज के तीन बोरों की इकाई का मूल्य मुर्गी पालने, ब्रांडी के आसवन और तोतों को खिलाने से मिलने वाली कुल संतुष्टि के बराबर होगा। यह तीन बोरों की अंतिम इकाई से संबंधित सीमांत संतुष्टि है।

मूल्य सिद्धांत के परिचालन के लिए प्रयुक्त इकाई का आकार महत्वपूर्ण नहीं होता। यह देखा जा सकता है कि यदि एक व्यक्ति ऐसी असंभव स्थिति में हो जिसे सभी पानी और सभी हीरे के बीच क्रम निर्धारित करने के लिए कहा जाए तो वह पानी को प्रथम और हीरे को द्वितीय क्रम प्रदान करेगा तथा मूल्य के विरोधाभास की विद्यमानता को नकार देगा। इससे यह भी पता चलता है कि एक वस्तु विशेष की आपूर्ति इतनी अधिक है कि कुछ इकाईयां अप्रयुक्त रह जाती हैं, वस्तु की सीमांत उपयोगिता शून्य है, ऐसी स्थिति में किसी इकाई विशिष्ट का कोई मूल्य नहीं होगा। यह वस्तु अर्थशास्त्र के क्षेत्र से संबंध नहीं रखती और इसे मुक्त वस्तु कहा जा सकता है।

सामान्य हवा जिसे हम सांसों से ग्रहण करते हैं, की ऐसी ही दशा है (हालांकि वायु प्रदूषण ने कुछ ऐसी स्थितियां जिनमें महंगी पर मुफ्त नहीं, स्वच्छ हवा सम्मिलित है, पैदा कर दी हैं)।

मूल्य और विनिमय

एक आधुनिक अर्थव्यवस्था में उत्पादन का अर्थ वस्तुओं और सेवाओं को बनाना है जिन्हें स्वयं उत्पादक के अलावा अन्य लोग भी उपयोग में ला सकें। यही विशिष्टीकरण और श्रम विभाजन का सार है। एक विकसित समाज में तात्कालिक उपयोग के लिए उत्पादन की तुलना में विनिमय के लिए उत्पादन का अधिक महत्व है। इसके परिणामस्वरूप एक उत्पादक के लिए वस्तुओं और सेवाओं की इकाईयों के उपयोग मूल्य के अतिरिक्त विनिमय मूल्य भी होता है। यहां सबसे अधिक जोर विनिमय के लिए उत्पादन पर रहता है, इसलिए उत्पादित वस्तुओं का विनिमय मूल्य ही उत्पादकों के लिए वास्तविक मूल्य है और उनके महत्व का है जबकि उपभोक्ता के लिए वस्तु का उपयोग मूल्य कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

यहां यह दिखाई दे सकता है कि विनिमय मूल्य का विचार मूल्य के विषयगत सिद्धांत से हटकर है, परंतु ऐसी स्थिति नहीं है। दी हुई वस्तु की एक इकाई अपने विनिमय मूल्य को विषयगत मूल्य से व्युत्पन्न करती है और बदले में अन्य वस्तु के साथ विनिमय की जा सकती है। विनिमय उपभोग की जाने वाली किसी अन्य वस्तु के साथ हो अथवा मुद्रा की निश्चित मात्रा के साथ हो। व्यक्ति मुद्रा सहित अन्य वस्तुओं को प्राप्त करना चाहते हैं क्योंकि इन प्राप्तियों के लिए वह उनका विषयगत मूल्यन करते हैं। विनिमय के माध्यम के रूप में एक वस्तु का मूल्य उस अधिकतम संतुष्टि पर निर्भर करता है जो वस्तु धारक इस वस्तु का अन्य वस्तु से विनिमय करके प्राप्त करता है। सबसे रुचिकर वस्तु अथवा सेवा का विषयगत मूल्य अधिकृत वस्तु के आरोपित मूल्य के साथ विनिमय करके प्राप्त किया जा सकता है।

अतः किसी वस्तु विशेष के उपयोग और विनिमय मूल्य दोनों ही होते हैं। इनमें से प्रत्येक मूल्य उस संतुष्टि को प्रतिबिंबित करता है जिसकी उस वस्तु से आशा की जाती है। इस वस्तु का सीधे ही उपयोग किया जा सकता है अथवा अन्य व्यक्ति के साथ किसी दूसरी वस्तु के साथ विनिमय करने के साधन के रूप में किया जा सकता है। दो वैकल्पिक संतुष्टि में से निर्णय और क्रिया का नियंत्रणकारी मूल्यन हमेशा ही ज्यादा होता है। यदि वस्तु का उपयोग मूल्य उसके विनिमय मूल्य से अधिक है, तब वस्तु का सीधे ही उपयोग किया जाएगा या सीधे उपयोग के लिए अपने

पास रखा जाएगा और हमें इसके विनिमय मूल्य को छोड़ना होगा। इसके विपरीत, यदि इसका विनिमय मूल्य इसके उपयोग मूल्य से अधिक है, तब वस्तु का उपयोग विनिमय के उद्देश्य के लिए किया जाएगा अथवा भविष्य में किसी समय पर संभावित विनिमय के लिए अपने पास रखा जाएगा।

यह समझ लेना चाहिए कि यहां विनिमय मूल्य से अभिप्राय उस विषयगत मूल्यन से है जो वस्तु का स्वामी विनिमय के माध्यम के रूप में दिलाता है। विनिमय मूल्य शब्द का उपयोग प्रायः मौद्रिक कीमतों के अर्थ में लिया जाता है जिसे एक वस्तु की बिक्री के द्वारा प्राप्त किया जाता है। मूल्य की विषयगतता के संबंध में, इस वस्तुगत मुद्रा के मूल्य का मूल्यांकन विषयगत रूप में उसी प्रकार किया जाएगा जिस प्रकार विनिमय के माध्यम से प्राप्त गैर-नकदी वस्तु का मूल्यांकन किया जाएगा।

मुद्रा के उपयोग

अति आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रा मुख्यतया कागजी मुद्रा होती है और उपभोग उद्देश्य के अर्थ में इसका उपयोग मूल्य शून्य होता है। लेकिन जहां सोने-चांदी के सिक्के उपयोग में लाए जाते हैं, वहां इनका उपयोग मूल्य काफी अधिक होता है। उदाहरण के लिए सोने और चांदी को गलाकर उसका आभूषण, सजावटी सामान या दांतों में उपयोग किया जा सकता है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा को किसी अन्य उपयोगी पदार्थ में बदलने की घटनाएं सामान्य नहीं हैं, प्रायः मुद्रा का मूल्यन इसकी विनिमयशीलता के लिए किया जाता है। मुद्रा द्वारा की जाने वाली सबसे बड़ी सेवा यह है कि विनिमय के पक्षों के लिए उत्पाद के संयोग की आवश्यकता नहीं होती, जैसाकि प्रत्यक्ष लेन-देन में दोहरे संयोग की आवश्यकता पड़ती है (आगे भाग में सरकार द्वारा साख प्रसार के कारण मुद्रा प्रदूषण की आधुनिक दिनों की स्फीति की व्याख्या की जाएगी)।

मुद्रा की विशिष्ट मात्रा के तात्कालिक उपयोग के तीन तरीके होते हैं। इस मुद्रा का उपयोग उपभोग हेतु वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने के लिए आवश्यक व्यय के रूप में किया जाता है। मुद्रा का उपयोग उत्पाद क्रिया में इस्तेमाल होने वाली वस्तु और सेवा की खरीद में भी किया जा सकता है। इस स्थिति में निवेश व्यय किया जाता है ताकि उत्पादित वस्तु का भविष्य में उपभोग अथवा निवेश के लिए उत्पादन हो सके। थोक और फुटकर विक्रेता भौतिक वस्तु में कोई परिवर्तन नहीं करते, उसे केवल सुविधाजनक और सुगम स्थान पर स्थापित करते हैं। इस प्रकार

वह उत्पादक प्रक्रिया में व्यस्त रहते हैं और मुद्रा का व्यय करके वस्तु के तैयार स्टॉक को उत्पादन के लिए उपयोग करते हैं।

मुद्रा का तीसरा उपयोग इसे नकदी रूप में अपने पास रखने से है जिससे भावी विनिमयों के भुगतान में सहायता मिल सके। यह तथ्य कि एक व्यक्ति एक निर्धारित क्षण पर मुद्रा की एक निश्चित मात्रा अपने पास रखता है, यह दर्शाता है कि वह मुद्रा को अन्य वस्तुओं जिन्हें वह विनिमय के माध्यम से प्राप्त कर सकता था, की तुलना में अधिक मूल्य प्रदान करता है। लेकिन एक निर्धारित क्षण पर मुद्रा की मात्रा रखने से यह सच नहीं बदलता कि मुद्रा का मूल्य इसकी विनिमयशीलता के लिए है। यह केवल दर्शाती है कि वर्तमान में किए गए विनिमयों की तुलना में बाद में किए जाने वाले विनिमयों का मूल्य अधिक होता है। नकदी की आपूर्ति में होने वाली वृद्धि से उत्पन्न संतुष्टि प्रायः हमें अधिक सुरक्षा का एहसास कराती है। यह मूल्यन इस विश्वास से निकलता है कि एक व्यक्ति अपने संचित नकद शेषों का व्यय करके भविष्य में अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर पाएगा। अतः मुद्रा परिसंपत्ति एक सेवा अथवा संतुष्टि का सृजन करता है और इसलिए बंजर और गैर-उत्पादक नहीं है, यह अर्थशास्त्र के अध्ययन में अरस्तू के दिनों से यह माना जाता रहा है। प्रो. डब्ल्यूएच हट ने भी यही कहा है। (उसके लेख द यील्ड फ्रॉम मनी हैल्ड को ऑन फ्रीडम ऐंड फ्री इंटरप्राइज में देखें सं. मैरी स्नाहोल्ज प्रिंस्टन, वैन नोस्ट्रेंट कं. 1956 पृ. 196-216)।

अन्य वस्तुओं की भांति सीमांत उपयोगिता ह्रास सिद्धांत मुद्रा पर भी लागू होता है। मुद्रा की इकाइयों का उपयोग इस तरह से किया जाता है कि सबसे जरूरी और तात्कालिक उद्देश्यों व आवश्यकताओं को पहले पूरा किया जाता है। मुद्रा की आसान विभाजनशीलता के कारण इसका आबंटन आसानी से कई उपयोगों में किया जा सकता है जबकि किसी अन्य वस्तु के द्वारा इतनी आसानी से यह करना संभव नहीं है। मुद्रा की सीमांत उपयोगिता अंतिम इकाई से प्राप्त होने वाली उपयोगिता के बराबर होगी। जैसा कि अनाज के 5 बोरे वाले किसान के उदाहरण में था, मुद्रा की इकाई से प्राप्त होने वाली संतुष्टि, वह संतुष्टि है जिसका हमें एक इकाई की हानि होने पर त्याग करना पड़ता है। हानि का प्रभाव हमेशा ही उस सबसे कम महत्वपूर्ण उपयोग पर पड़ेगा जिसके द्वारा वह इकाई खरीदी जाती। फिर भी यह त्याग वह सबसे महत्वपूर्ण उपयोग है, जिसके लिए सीमांत इकाई को उपयोग में लाया जाता। अतः एक व्यक्ति अपनी मुद्रा का आबंटन उपभोग

व्यय करने, उत्पादन व्यय करने और नकद कोषों को बढ़ाने के बीच अपनी अधिमानताओं अथवा मूल्यों के पैमाने के आधार पर करेगा।

बाजार अर्थव्यवस्था में उपयोग और विनिमय मूल्य

सामाजिक सहयोग की व्यवस्था के अंतर्गत उत्पाद प्रक्रिया में मुद्रा सहित वस्तुओं के उपयोग की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इस्तेमाल करने वाले का संबंध केवल अपनी संतुष्टि अथवा अधिमानता तक ही नहीं होता। चूंकि वह उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में लगा हुआ है जिनका उपयोग अन्य व्यक्तियों द्वारा किया जाता है, इन वस्तुओं का विनिमय मूल्य उत्पादन प्रक्रिया के पूर्ण हो जाने के बाद अन्य व्यक्तियों की सापेक्ष अधिमानता पर निर्भर करेगा। उत्पादक अपने उत्पाद क प्रयासों के लिए कितने डॉलर प्राप्त करने की आशा करेगा, यह अंतिम तौर पर अन्य व्यक्तियों के मूल्यों के बारे में उसके प्रत्यक्ष ज्ञान पर निर्भर करेगा।

निश्चितता की इस दुनिया में वस्तुओं और सेवाओं के समूह के लिए मुद्रा के मूल्य निर्धारण में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। एक आधुनिक बाजार अर्थव्यवस्था में केवल कुछ अनुबंधित बिक्री की स्थिति में उत्पादक प्रयासों के लिए तुलनात्मक रूप मुद्रा प्राप्ति निश्चित है। और कुछ स्थितियों में, निवेशित संसाधनों का एक कार्य क्षेत्र, अनुबंधित बिक्री को पूरा करने की तुलना में ज्यादा होता है जो यह दर्शाता है कि उत्पादक अभी उस बिक्री पर निर्भर कर रहा है जिसका अभी अनुबंध नहीं हुआ है। अनिश्चित भविष्य की स्थिति में अन्य व्यक्तियों की आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पादित करना ही उद्यम का सार है।

एक बाजार अर्थव्यवस्था में यह देखा जा सकता है जहां विनिमय के आय विनिमय के द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन विनिमय के लिए किया जाता है और उपयोग और विनिमय मूल्य दोनों ही आर्थिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। वस्तुओं और सेवाओं के अंतिम तौर पर इस्तेमाल करने वाले उपभोक्ता उपभोग से संतुष्टि प्राप्त करते हैं जो मूल्य अथवा उपयोगिता का स्रोत है। उत्पादकों के लिए जो वस्तुएं और सेवाएं उत्पादन के लिए समर्पित हैं, मुद्रा और इसके विनिमय मूल्य के रूप में तभी सार्थक हैं जो वह अपने उत्पाद की बिक्री से अर्जित करने की आशा करते हैं। लेकिन उपयोग मूल्य और विनिमय मूल्य में अंतर करने का मूल बिंदु यह है कि किसी भी उत्पादित वस्तु का विनिमय मूल्य उसके उपभोग मूल्य जो उपभोक्ता अपने अंतिम उत्पाद को देते हैं, से संबंधित होता है। उपभोक्ता विभिन्न वस्तुओं और

सेवाओं पर व्यय करने के लिए मुद्रा की जो मात्रा आबंटित करना चाहते हैं, वह उनकी विषयगत अधिमानताओं द्वारा प्रभावित होती है। मुद्रा का यही वह अंतर्प्रवाह जो उत्पादन में लगी वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय मूल्य का आधार प्रदान करता है। उत्पादक संसाधनों की कीमतें उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों से किस प्रकार व्युत्पन्न होती हैं, की व्याख्या बाद के भाग में की जाएगी।

विषयगत मूल्यन की व्यापकता

विषयगत मूल्यन सभी आर्थिक क्रियाओं के मूल में रहता है। मुद्रा, मूल्य का मापक नहीं है, इसके विपरीत मुद्रा में विषयगत मूल्य अन्य वस्तुओं के साधन के रूप में आरोपित होता है। कोई भी विषयगत मूल्यन मापने योग्य नहीं होता और उसे केवल विशिष्ट चयन और क्रियाओं के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। कोई भी विशिष्ट चयन निर्णयकर्ता की सभी विकल्पों में से अधिमानता का सूचक होता है। व्यक्ति द्वारा लिए गए निर्णय के आधार पर अधिमानता के अनुमानित करने का यह अर्थ नहीं है कि अधिमानता में कुछ और भी सन्निहित है। जैसा कि रोथबर्ड ने कहा है, वास्तविक क्रिया के आधार पर हम विशिष्ट मूल्य के पैमने की विद्यमानता की व्युत्पत्ति करते हैं, हमें मूल्य के पैमाने के उस भाग की कोई जानकारी नहीं होती जिसे वास्तविक क्रिया में उद्घाटित नहीं किया जाता। (मरे एन. रोथबर्ड, मैन, इकोनॉमी ऐंड स्टेट, प्रिंस्टनः वन नोस्ट्रेंट कंपनी, पृ. 224)।

यहां कोई ऐसा तरीका नहीं है जिससे कर्ता के चयन से संबंधित संतुष्टि की मात्रात्मक माप की जा सके। प्रत्येक चयन के लिए अन्य संभावित चयनों से प्राप्त होने वाली संभावित संतुष्टि को अस्वीकार करने की आवश्यकता होती है। किसी भी लिए गए निर्णय की लागत सबसे विकल्प से होने वाली संभावित संतुष्टि होती है। लागत और लाभ अंतिम तौर पर विषयगत होते हैं। प्रत्येक निर्णय का इस मान्यता के आधार पर पूर्वानुमान लगाया जाता है कि इससे प्राप्त होने वाले लाभ इसके श्रेष्ठतम विकल्प के होने वाले लाभों से अधिक होंगे। प्रत्येक विनिमय की यही पृष्ठभूमि है। समान विनिमय जैसी कोई चीज नहीं होती। विनिमय के बिंदु पर क्रेता और विक्रेता दोनों स्वयं को विनिमय के परिणास्वरूप और अधिक श्रेष्ठ स्थिति में पाते हैं। व्यापक विशिष्टीकरण और श्रम विभाजन की एक व्यवस्था में ज्यादातर वस्तुएं विनमय के लिए ही उत्पादित की जाती हैं। विशिष्टीकरण उत्पादकों के लिए उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं के सीधे उपयोग के लिए बहुत कम

संभावना रहती है। सीमांत उपयोगिता ह्रास सिद्धांत के अंतर्गत उत्पादकों के लिए उत्पादक की इकाई की सीमांत उपयोगिता शून्य ही होती है। वह अपनी वस्तुओं के लिए जो मुद्रा प्राप्त कर सकते हैं उसे अधिक मूल्य देते हैं। इसके विपरीत वस्तु के क्रेता या उपभोक्ता वस्तु को क्रय करने के लिए जो मुद्रा व्यय करते हैं, उससे अधिक मूल्य (संतुष्टि) प्राप्त करते हैं। विनिमय केवल तभी होते हैं जब विनिमय के दोनों पक्षों द्वारा प्रदर्शित विषयगत मूल्यन में अंतर हो।

इस विषयगत दृष्टिकोण को मानने की असफलता हमें आर्थिक व्यक्ति की दुर्भाग्यपूर्ण धारणा की ओर ले जाती है जहां बाजार अर्थव्यवस्था में प्रत्येक प्रतिभागी लगातार अपनी मौद्रिक स्थिति को अधिकतम करने पर लगा हुआ है। यह विचार अवास्तविक है क्योंकि वास्तव में व्यक्ति अपनी प्रत्येक क्रिया से जो अधिकतम करना चाहते हैं वह मानसिक या विषयगत लाभ हैं।

यहां पर कई ऐसे उदाहरण दिए जा सकते हैं जिनमें व्यक्ति अतिरिक्त मौद्रिक संपत्ति को इसलिए छोड़ देते हैं क्योंकि वह समझते हैं कि इसकी लागत इसके मूल्य से अधिक है। ऐसे भी निवेशक होते हैं जो ऐसे उद्योगों द्वारा उत्पादित उत्पादों में लाभप्रद निवेश होने के बावजूद भी निवेश नहीं करते क्योंकि इनके उत्पाद आपत्तिजनक होते हैं। विक्रेताओं ने यह जाना है कि उपभोक्ता खरीदने योग्य वस्तु और इनकी संबंधित कीमत के अलावा कभी-कभी अन्य कुछ कारकों को भी ध्यान में रखते हैं। वाहन खड़ा करने के स्थान की उपलब्धता, क्लर्कों द्वारा शिष्टाचार और स्टोर का व्यक्तित्व आदि भी सौदा लेने वालों के ध्यान खींचते हैं। समृद्ध उद्यमी जो अपनी अधिक उम्र में भी लाभ अर्जित कर रहे हैं, इसमें कोई शक नहीं कि वह ऐसा मुद्रा के अलावा अन्य कारणों से कर रहे हैं। व्यक्ति भी अपने करियर या कार्य विशिष्ट के बारे में निश्चय करते समय मजदूरी के अलावा अन्य कारकों का भी ध्यान रखता है।

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि क्लासीकीय अर्थ में व्यक्ति आर्थिक व्यक्ति नहीं होता और मुद्रा, मूल्यन का आखिरी आधार नहीं होता। मौद्रिक लेन-देन के समय भी व्यक्ति प्रत्येक निर्णय और कदम की मौद्रिक रूप में गणना नहीं करते। वह मौद्रिक अर्थ में नहीं वरन् विषयगत रूप में अधिकतम करते हैं क्योंकि जब समय और ऊर्जा की आवश्यकता को महत्व दिया जाता है तब मौद्रिक गणना का त्याग किया जाना चाहिए। बॉम-वार्क ने इस बिंदु को इस रूप में देखा हैः

यदि कोई सावधानीपूर्वक प्रत्येक आर्थिक क्रिया को अधिकतम ईमानदारी के साथ प्रतिदिन करता है, यदि वह नगण्य वस्तु पर निर्णय लेते समय अंतिम ब्यौरे तक जानने का प्रयत्न करता है तब वह अपनी जिंदगी में बहुत अधिक व्यस्त होगा। आर्थिक जीवन में पालन करने वाला सही नीति वचन यह है कि, जितना परिशुद्ध बनने की आवश्यकता है, उससे ज्यादा नहीं बनो। वास्तव में महत्वपूर्ण वस्तुओं की स्थिति में जैसा यथार्थ में चाहिए, वैसा करो, साधारण महत्वपूर्ण वस्तुओं की स्थिति में साधारण यथार्थवादीः प्रतिदिन के आर्थिक जीवन में असंख्य नगण्य वस्तुओं की स्थिति में केवल कामचलाऊ प्रकार का मूल्यन करो। (बॉम-वार्क, कैपिटल ऐंड इंटरेस्ट, पृ. 202)।

यह कहा जा सकता है कि अन्य बातों के समान रहने पर क्रिया के विभिन्न विकल्पों में से व्यक्ति उसका चुनाव करेंगे जिससे उनकी मौद्रिक स्थिति और मजबूत हो। एक व्यक्ति जब तक अमौद्रिक कारकों के प्रति उदासीन रहता है, वह विभिन्न विकल्पों में से उसका चयन करेगा जहां उसे अधिकतम मौद्रिक लाभ हो। एक बाजार अर्थव्यवस्था में व्यक्ति विनिमय के सामान्य माध्यम के द्वारा उन वस्तुओं का चयन करता है जिससे उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है। व्यक्ति अपनी मौद्रिक स्थिति को मजबूत करते हुए वह उन वस्तुओं और सेवाओं को खरीदना चाहेंगे जिनके लिए उन्हें कम मुद्रा का त्याग करना पड़ता है। इसको इस अर्थ में नहीं लेना चाहिए यहां सभी व्यक्ति अंतिम तौर पर अपनी मौद्रिक संपत्ति को अधिकतम करना चाहते हैं। कोष बढ़ाने के उत्साही प्रयासों को लालच नहीं कहा जा सकता। मुद्रा एक ऐसा माध्यम है जिससे कई ऐच्छिक साध्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

एक व्यक्ति अधिकतम मौद्रिक स्थिति से कम केवल तभी स्वीकार करेगा जब अमौद्रिक कारकों से प्राप्त होने वाली संतुष्टि अन्य चयन से संबंधित मौद्रिक संतुष्टि की क्षतिपूर्ति से अधिक होती हैं। रोजगार से संबंधित लिए जाने वाले निर्णयों में अमौद्रिक कारकों की भूमिका निवेश और उपभोग व्यय से संबंधित निर्णयों की तुलना में अधिक होती है। सामान्यतया निवेशक अपने निवेश से अधिकतम वित्तीय प्राप्ति चाहते हैं, उपभोक्ता भी सामान्यतया कम से कम संभावित कीमतों पर वस्तुओं को खरीदना चाहते हैं।

अतः विषयगतता के लाभ और लागत के बावजूद उत्पादक क्रियाओं से संबंधित मौद्रिक अंतर्प्रवाह और बाह्य प्रवाह का मौद्रिक आगम और मौद्रिक लागत से गहरा संबंध है। अमौद्रिक कारक जो एक उत्पादक के लिए महत्वपूर्ण हैं, चाहे जो हों, कुछ वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने की

इच्छा के लिए उसकी मौद्रिक स्थिति का महत्वपूर्ण होना आवश्यक है। इसका अभिप्राय है कि उसे मौद्रिक लागतों और मौद्रिक आगम पर सरसरी निगाह से अधिक ध्यान देना ही चाहिए। लेकिन यहां पर एक बार और कहना जरूरी हो जाता है कि यह मौद्रिक गणनाएं किसी भी तरह से विषयगत अर्थ में मूल्य की माप नहीं है। रोथबर्ड ने शब्द सावधानीपूर्वक मूल्य के उपयोग की आवश्यकता पर जोर दिया हैः यहां बाजार में कीमत अथवा क्रयशक्ति के अर्थ में वस्तुगत उपयोग के विपरीत मूल्यन और अधिमानता के अर्थ में मद के विषयगत उपयोग को अलग रहना महत्वपूर्ण होगा। (रोथबर्ड, मैन, इकॉनोमी ऐंट स्टेट, पृ. 271) मिज़ीस के शब्द विषयगत अर्थ के साथ मूल्यन और मौद्रिक अर्थ में शब्द वस्तुगत मूल्य निर्धारण के बीच अंतर किया है। ह्यूमन एक्शन पृ. सं. 331-33. इस अनुभाग में शब्द मूल्य और मूल्यन का उपयोग विषयगत अर्थ में किया गया है।)

सहायक पुस्तकेः

- क्रिजनर, इजराइल एम. मार्किट थ्योरी ऐंड प्राइज सिस्टम, पृ. 45-62
- मेन्गर, कार्ल, प्रिंसिपल ऑफ इकोनॉमिक्स (1871), ट्रांस डिंगवाल ऐंड बी. होजलिट्ज ग्लेनको,3, फ्री प्रैस, 1950 पृ. 114-174
- मिज़ीस, लुडविग वॉन, ह्यूमन एक्शनः ए ट्रीटाइज ऑन इकोनॉमिक्स, पृ. 92-98, 119-142